Postal Reg. No. : XXXXXXXXX

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 1

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 22

मूल्य 300 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

4 अगस्त 2016 ई

29 शव्वाल 1437 हिजरी कमरी

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़ज़ल नाज़िल करे। आमीन

सच्चा ईमान कदापि नहीं उपलब्ध हो सकता
जब तक नबियों का सच्चा अनुपालन और प्रेम धारण न किया जाए।
उपदेश हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

"आत्म शुद्धि बड़ा कठिन स्तर है और मुक्ति का भरोसा आत्म शुद्धि पर निर्भर है। अल्लाह तआला फरमाता है قَدۡ اَفۡلَحَ مَنۡ زَکّٰىہَا (अश्मस: 10) और आत्म शुद्धि केवल ख़ुदा के फज़ल के अतिरिक्त मिल नहीं सकती। यह ख़ुदा तआला का अटल नियम है। لَنۡ تَجِدَ لِسُنَّۃِ اللّٰہِ تَبۡدِیۡلًا (अल्फतह: 24) और उसका कानून जो फज़ल को खींचने के लिए हमेशा निर्धारित है वह यही है कि रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अनुकरण किया जाए। मगर दुनिया में हज़ारों ऐसे हैं जो कहते हैं कि हम भी ला इलाहा इल्लल्लाह कहते हैं, अच्छे कर्म करते है, बुरे कर्मों से परहेज़ करते हैं। वास्तव में उनका मुद्दा यह है कि उन्हें रसूल के अनुसरण की ज़रूरत नहीं। मगर याद रखो यह बड़ी ग़लती है और यह भी शैतान का एक बड़ा धोखा है कि ऐसे लोगों के दिलों में पैदा करता है। अल्लाह तआला ख़ुद अपनी पवित्र वाणी में आत्म शुद्धि और अल्लाह तआला की मुहब्बत को रसूल के अनुसरण की शर्त से जोड़ें रखा है तो कौन है कि वे दावा कर सके कि स्वत: ही अपनी शक्ति से पवित्र हो सकता हूँ। सच्चा विश्वास और पूर्ण अनुभुति से सच्चा ईमान कदापि नहीं उपलब्ध हो सकता जब तक नबियों का सच्चा अनुपालन और प्रेम धारण न किया जाए। गुनाह को नष्ट करने वाला ईमान और ख़ुदा को दिखा लेने वाला ईमान सिवाय सामर्थवान और भविष्य पर आधारित ज़बरदस्त भविष्यवाणी जो मानवीय शक्तियों और सोच और कल्पना से परे हों, कदापि उपलब्ध नहीं हो सकता। दुनिया अपने सांसारिक व्यापार में जितनी तन्मयता और एकाग्रता से व्यस्त होती और जैसे जान कठिनाई में डालना और ख़तरनाक मुश्किल से मुश्किल कोशिशें अपनी दुनिया के लिए करती है अगर ख़ुदा तआला की तरफ भी इसी तरह की कोशिश से कदम उठाए और इस समय जो एक आसमानी सिलसिला ख़ुदा तआला ने इस उद्देश्य के लिए निर्धारित किया है इसकी ओर आकर्षित हो तो हम विश्वास से कहते हैं कि निश्चित रूप से अल्लाह तआला उनके लिए दया के निशान दिखाने में सक्षम है। मगर वास्तविक बात यह है कि लोग इस पहलू से लापरवाह हैं वरना धार्मिक मामले और कार्य क्या मुश्किल हैं। नमाज़ में कोई मुश्किल नहीं। पानी मौजूद है, ज़मीन सिज्दा करने के लिए मौजूद है। अगर ज़रूरत है तो एक आज्ञाकारी और पवित्र दिल की जिसे अल्लाह की मुहब्बत की एक सच्ची तड़प हो। देखो अगर सारी नमाज़ों को एकत्र किया जाए और उन के समय का मूल्यांकन किया जाए तो शायद एक घड़ी भर में सारी पूरी हो सकें। आख़िर मल के लिए भी जाते हैं। अगर उतना ही मूल्य नमाज़ का उन लोगों के दिलों में हो तो भी यह नमाज़ को अदा कर सकते हैं। मगर अफसोस इस्लाम इस समय बहुत खतरे में है और मुसलमान दरअसल ईमान के नूर से बेनसीब हैं। अगर किसी को एक घातक रोग लग जाए तो कैसी चिंता लग जाती है मगर इस आध्यात्मिक कुष्ठ की किसी को भी परवाह नहीं जिसका अंजाम जहन्नम है।

वास्तव में हमारे पास आना ख़ुदा के सामने जाना है और हमारा सम्मान वास्तव में ख़ुदा और रसूल की वाणी का सम्मान है। निरन्तर छब्बीस साल हुए हैं कि उस ने हमें मामूर किया, मुजद्दिद बनाया और ज़माना की बुराइयों के सुधार के लिए दुनिया में भेजा। और फिर यही नहीं कि केवल हमारा मौखिक दावा हो बल्कि उसने साथ ही साथ अपने हज़ारों ज़बरदस्त निशान भी दिए। नबुव्वत की कसौटी पर भेजा मगर लोगों ने परवाह नहीं की बल्कि उल्टा काफिर कहा। सब से बड़ा काफिर कहा। दज्जाल कहा। हालांकि जिस ख़ुदा ने मुझे भेजा उसने मेरी सत्यता के लिए निशान भी दिखाए। एक नहीं, दो नहीं बल्कि हज़ारों निशान। सांसारिक अदालतों में चाहे कितना ही सख्त से सख्त मुकदमा हो मगर दो-तीन गवाह बीतने पर मृत्युदंड तक भी दी जाती है मगर यहां तो हज़ारों लोग हैं जो हमारे अपने निशान के गवाह हैं। पूर्व से पश्चिम तक कोई जगह नहीं जहां हमारे निशानों की गवाही मौजूद न हो मगर फिर भी इन लोगों ने परवाह नहीं की।

सरकार का छोटा चपरासी लगान की वसूली के लिए आ जाए कोई उसका मुकाबला नहीं करता और अगर करेगा तो सरकार का विद्रोही ठहरता है और सज़ा पाता है मगर खुदाई सरकार की लोग परवाह नहीं करते। ख़ुदा तआला से आने वाले निसन्देह ग़रीबी की पोशाक में होते हैं। लोग उन्हें घृणा और उपहास से देखते हैं। हंसी ठट्ठा करते हैं। मगर अल्लाह तआला फरमाता है

یٰحَسۡرَۃً عَلَی الۡعِبَادِ ۚ مَا یَاۡتِیۡہِمۡ مِّنۡ رَّسُوۡلٍ اِلَّا کَانُوۡا بِہٖ یَسۡتَہۡزِءُوۡنَ

(यासीन: 31) अल्लाह तआला सच्चा है वह झूठ नहीं कहता। वह कहता है कि आदम से लेकर अंत तक जितने भी नबी आए हैं इन सभी से हंसी ठट्ठा किया गया है, लेकिन जब समय बीत जाता है तो लगते हैं प्रशंसा करने। शेख अब्दुल कादिर जिलानी भी लगभग दो सौ युग के उलेमाओं ने कुफ्र का फतवा लगाया था। इब्ने जौज़ी जो समय का मुहद्दिस था उसने एक किताब लिखी और तलबीस इब्लीस उसका नाम रखा और बहुत कुछ कड़वा और अपशब्द उनके पक्ष में इस्तेमाल किया। मगर उनके दो सौ साल बाद उन्हें कैसा पूर्ण और पवित्र सच्चा इंसान माना गया और कैसी स्वीकृति हुई, दुनिया जानती है। यह सिर्फ इन्हीं पर नहीं बल्कि सभी औलिया के साथ यही व्यवहार होता चला आया है।

अत: इसी कसौटी में मुझे भी सारे पंजाब और भारत के उल्मा ने काफ़िर, दज्जाल, अनैतिक, संकीर्णता आदि के भाषण दिए हैं और कहते हैं कि नाऊज़ बिल्लाह में नबियों को गालियां देता हूँ। हालांकि मैं उन सभी नबियों का आदर करता हूँ और उनकी महानता और सच्चाई प्रकट करने के लिए ही मेरा प्रादुर्भाव हुआ है। निश्चय जानो कि अगर मैं ख़ुदा तआला की ओर से नहीं हूँ और मैं ही झूठा हूँ तो सभी नबियों में से किसी की भविष्यवाणी कोई साबित नहीं कर सकता। अगर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की मृत्यु का उल्लेख करना गालियां देना है तो सबसे पहले जिसने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को गाली दी, वह ख़ुदा है।"

(मल्फूज़ात भाग 5 पृष्ठ 573-574 संस्करण 2003 मुद्रित रबवा)

☆ ☆ ☆

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सम्पादकीय

उन्नत टेकनोलेजी और बच्चे

आधुनिक टेकनोलेजी के बच्चों पर प्रभाव

जैसे-जैसे इंसान उन्नति करता हुआ आधुनिक टेकनोलेजी के क्षेत्र में प्रवेश कर रहा है इसके सामाजिक और पारिवारिक जीवन में और विशेष रूप से नई पीढ़ी पर गहरे प्रभाव हो रहे हैं। अगर माना जाए तो आज के बच्चों और आज से 30, 40 साल पहले के बच्चों में बहुत अंतर है तो कोई ग़लत बात न होगी सच है कि आधुनिक सुविधाओं ने मानव जीवन को बदल दिया। जिस तरह से आधुनिक तकनीक शुरू हुई है इसी तरह से ख़ुदा तआला ने इस समय के लिहाज़ से पैदा हुए बच्चों के दिमाग़ भी असामान्य बनाए हैं। नई बनने वाले आविष्कार के साथ इन बच्चों की असाधारण कौशल उभरते हैं और यह बहुत जल्दी चीज़ों को समझ जाते हैं।

जब मोबाइल फोन, वीडियो गेम, टीवी, कंप्यूटर आदि नहीं हुए, तब माता-पिता और बच्चों का रिश्ता बहुत क़रीब था। माता पिता का बच्चों के प्रशिक्षण की ओर विशेष ध्यान होता था। मुहल्ले की मस्जिदों में समय पर नमाज़ों में भिजवाना, तरबियती जलसों में भाग लेना, दैनिक कुरआन की तिलावत आदि माता पिता नियमित बच्चों की निगरानी करते उनके दोस्तों पर नज़र रखते कि बच्चों की सोसायटी कैसी है। इसके बाद बच्चे खेल के लिए मुहल्ले के ग्राउंड में नियमित जाते इन दिनों गराउंड आबाद होते थे। बच्चे और युवा मग़रिब की नमाज़ पढ़ने के लिए मस्जिदों में चले जाते। नमाज़ के बाद जलसे होते साथ ही कक्षाएं भी आयोजित होती जिसमें मोहल्ले के बुज़ुर्ग बच्चों को छोटी बातें समझाते कि नमाज़ कैसे पढ़नी है? आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सुन्नत क्या थी। बच्चे बड़ों से अपने अपने ज्ञान और समझ के साथ सवाल करते तो बड़े बड़े प्यार से उत्तर देते। मस्जिदों के शिष्टाचार पर चर्चा होती। इस्लाम सुन्दर और प्यारी शिक्षाओं पर बातें होती थीं। इशा की नमाज़ अदा करने के बाद सभी लोग घरों को चले जाते और फिर घरों में बुज़ुर्गों के साथ महफ़िलें जमती थी। उनमें धार्मिक और सांसारिक दोनों बातें होतीं। बड़ा प्यार का माहौल होता था।

समय तेजी के साथ सफर करता हुआ नए नए आविष्कार के दौर में प्रवेश कर गया है जिससे इंसान का इंसान के साथ बच्चों का वयस्कों के साथ और माता पिता के साथ दूरी बढ़ती जा रही है जो चिंता योग्य है। आज यद्यपि कि आधुनिक टेकनोलेजी और आविष्कारों के अनगिनत लाभ हैं लेकिन कुछ नुकसान और हानियां भी पैदा हो रही हैं। बच्चे मोबाइल फोन, वीडियो गेम, और iPad की दुनिया में गुम हो गए हैं। घंटों अपने खेल में व्यस्त हो जाते हैं और आसपास के वातावरण से अनजान न नमाज़ का होश न खाने पीने का, माता पिता बुलाते रहते हैं कोई रिस्पांस नहीं, माता पिता को इस स्थिति में काफी परेशान हैं। इन समस्याओं और चिंताओं को दूर करने के लिए माता पिता को अक्ल और समझ से काम लेना होगा।

पहले बच्चों को घर में दोस्ती और प्यार का माहौल उपलब्ध कराना माता पिता की जिम्मेदारी है। माता पिता को ख़ुद भी त्याग करना होगा एक ओर बच्चे आईपैड खेल रहे होते हैं तो दूसरी तरफ माता पिता भी अपने मोबाइल फोन पर घंटों बातें करते नज़र आते हैं, ऐस प्रकार बच्चों और माता पिता में एक दूरी पैदा हो रही है, इंटरनेट, टेलीविजन , वीडियो गेम और मोबाइल फोन ने मानव जीवन बदल कर रख दिया है, इन आविष्कारों ने हमारे सुंदर पारिवारिक प्रणाली को बुरी तरह प्रभावित किया है, यह बात सही है कि नए नए आविष्कार ने हमें बहुत सी सुविधाएं प्रदान की हैं लेकिन इन के अधिक और नकारात्मक उपयोग ने जीवन शैली बदल कर रख दी है। उनके साथ साथ बच्चों के व्यवहार भी बदल गए हैं। यह बात सही है कि हम बच्चों को आधुनिक आविष्कार से इसलिए परिचय करवाते हैं कि वह आधुनिक आविष्कारों को समझ सकें लेकिन वे परिणाम नहीं निकल रहे। जिनकी हम उम्मीद करते हैं, बच्चे जिद्दी और भावनाओं से खाली होते जा रहे हैं। न माता पिता का सम्मान बाकी रहा और न ही बुजुर्गों का सम्मान उनके दिलों में है यह हमारा दोष है कि हम ने उन्हें आईपैड और मोबाइल फोन की सुविधा आसानी से दे दी हैं और ख़ुद निश्चिन्त हो गए हैं यह बच्चों और खुद माता पिता अपने आप पर अत्याचार कर रहे हैं बच्चों के पास अगर हर चीज़ होगी तो वह क्यों माता पिता के पास आकर बैठेंगे। एक बात बहुत विचारणीय और चिंता योग्य है कि जब बच्चे छोटे होते हैं उनकी उम्र चार से पांच साल तक होती है तो बच्चे माता पिता के बहुत क़रीब होते हैं इस दौरान मां की कोशिश होती है कि बच्चे को कोई ऐसा खिलौना दे दिया जाए कि वह व्यस्त हो खासकर जब बच्चे के हाथ में टेबलेट या टेब हो फिर तो बच्चे का उत्सव हो जाता है और वह इतना व्यस्त हो जाता है कि उसे आसपास के होश नहीं रहता और माँ अपने कामकाज को समाप्त कर लेती है लेकिन बच्चा अपने टैबलेट के साथ खेल में मगन होता है। यह समय बहुत लंबा हो जाता है इस से बच्चे की सोच, स्वास्थ्य और भाषा पर बहुत प्रभाव पड़ता है। इसी तरह वीडियो गेम भी बच्चे के चरित्र और व्यक्तित्व को प्रभावित कर रही होती हैं, यह कृत्रिम चीजें यह वास्तविक जीवन से दूर ले जाती हैं। इसलिए माता-पिता को चाहिए कि वह बच्चे को नियमित एक समय सारिणी बना लें, बच्चों नमाज़ जमाअत के साथ अदा करने के लिए मस्जिदों में अपनी निगरानी में लेकर जाएं, कुरआन की तिलावत नियमित करने की दैनिक हिदायत और ख़ुद भी तिलावत कुरआन नियमित करें। इस तरह बच्चों के साथ कुछ समय निश्चित करें अपने पास बिठाएं। सच, और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सीरत की घटनाओं को दिलचस्प तरीके से सुनाए और सहाबा की घटनाएं उन्हें बताएं, ख़ुदा तआला से संबंध के ईमान वर्धक घटनाएं बच्चों को सुनाएं, इस के बाद बच्चों को खेल के लिए असर की नमाज़ के बाद ग्राऊंड में भिजवाएं और ख़ुद भी उन के खेल में रुचि लें, इसके अतिरिक्त जो प्रशिक्षण के जलसे मस्जिदों में होते उनमें लेकर जाएं, उनकी स्कूल की पढ़ाई के लिए भी समय निर्धारित करें ताकि वे धार्मिक शिक्षा के साथ सांसारिक ज्ञान के भी विशेषज्ञ बनें।

अब बात रह जाती है मोबाइल फोन और आई पेड और टीवी तो इसके लिए उन्हें समय दें इस मामले में सख्ती न करें बल्कि उन चीजों के साथ उन्हें खेलने दें लेकिन निर्धारित समय तक चाहे वह एक घंटे या डेढ़ घंटा हो इस के लिए माता-पिता को अपने समय का त्याग देना पड़ेगा वरना नई पीढ़ी सांसारिक आविष्कार और टेकनोलेजी की दुनिया में गुम हो जाएगी और हम हाथ मलते रह जाएंगे। कुछ बच्चों को बाग़वानी का जुनून होता है उन की यह इच्छा पूरी करें और उनके साथ उनका शौक पूरा करें।

यह बात पहले बताई जा चुकी है कि वीडियो गेम, कार्टोनज़ और टीवी पर बच्चों की इंग्लिश फिल्में, बच्चों की भाषा और उसकी सोच को बुरी तरह प्रभावित करती हैं उनमें कभी कभी गाली गलोच भी चलती है तो बच्चा गालियां भी सीख लेता है चाहे उन्हें मतलब नहीं भी आता हो। और अंग्रेज़ी स्कूल के वातावरण में गालियां निकालता है। याद रखें बच्चा यह सब स्कूल या पर्यावरण या दोस्तों से नहीं सीख रहा होता। बल्कि वह यह सब कुछ कार्टोनज़ और फिल्मों से सीख रहा होता है कि कोई भी हम में से इनकार नहीं कर सकता कि इन आधुनिक आविष्कारों और प्रौद्योगिकियों ने उन्नति की कई राहें खोलीं हैं। जीवन की बहुत सी आसानियां उन्हीं के कारण हैं अगर उन को सही ढंग से और सोच के साथ प्रयोग किया जाए तो इंसान इस ब्रह्मांड के छिपे ज्ञान के रहस्यों को जानकर अपने पैदा करने वाले रब्ब के और क़रीब हो सकता है और उस की पैदा की हुई इस ब्रह्मांड के कण कण के निर्माण पर आश्चर्य चकित रह जाता है।

एक और महत्त्वपूर्ण बात जिसकी ओर माता पिता को ध्यान देने की बहुत ज़रूरत है वह यह है कि जब हम बच्चे के भोजन का बहुत ख्याल रखते हैं और चिंतित रहते हैं कि यह खाता पीता कम है लेकिन यही माता पिता अपने बच्चे को बर्गर, पीज़ा और जूस और चिपस आदि खाता देखकर ख़ुश होते हैं। हालांकि बच्चा ये चीजें खाकर मोटा हो रहा होता है तब एक तरफ ऐसा भोजन और दूसरा घंटों वीडियो गेम, टीवी, कंप्यूटर, मोबाइल फोन का उपयोग बच्चों को मोटा बनाता है सेहत वाला नहीं बनाता क्योंकि मोटापा एक बीमारी है जो कि कई बीमारियों का कारण बनता है। खासकर शूगर का रोग आजकल अधिक फैल रहा है। इसका कारण अस्वस्थ गतिविधियां हैं। इसके अलावा बच्चे नींद की कमी का शिकार होते हैं। इसके साथ चिड़चिड़ा पन और अवसाद जैसी बीमारी हो जाती है। दूसरे बच्चा न सुबह उठ कर नमाज़ पढ़ते हैं और न ही समय पर स्कूल जाते हैं। इस तरह शैक्षिक गतिविधियां बुरी तरह प्रभावित होती हैं। यह ख़तरनाक और चिंतित स्थिति है। माता पिता को इस ओर जल्दी और विशेष ध्यान देने की ज़रूरत है। बच्चों को समय दें और उनके साथ अधिक समय खर्च करें। उन्हें अकेले पन का शिकार न होने दें। उन्हें किसी भी अवसर पर अनदेखी न करें। बल्कि उनकी खुशियों में शामिल हों और सबसे जरूरी और महत्त्वपूर्ण बात यह है कि अपने बच्चों के लिए दुआएं करें। अल्लाह उन्हें धार्मिक और सांसारिक क्षेत्रों में उच्च सफलताओं से सम्मानित और उनका व्यक्तित्व एक उच्च लक्ष्य पाने की ओर अग्रसर हो। उन्हें अपने मुहल्ले और परिवार के बुजुर्गों के साथ उनका परिचय कराएं। आजकल अल्लाह की कृपा से एम.टी ए की नेअमत हमारे घरों में मौजूद है। यह भी आधुनिक टेकनोलेजी का चमत्कार है। एम टी ए पर हमारे प्यारे हुज़ूर के ख़ुत्बे नियमित बच्चों को अपने पास बैठाकर सुनवाएँ और बाद में बच्चों को प्यारे इमाम के भाषण का मूल अर्थ समझाएं, ऐसे बच्चों में समय के ख़लीफा से प्यार पैदा होगा। अगर इस समय बच्चों के जीवन और दिल में ख़लीफा का प्यार और मुहब्बत बैठ गई तो समझें कि आपके बच्चे सुरक्षित हो गए।

(शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

☆ ☆ ☆

ख़ुत्बः जुमअः

दुआओं की स्वीकृति के लिए अल्लाह तआला पर पूर्ण ईमान और उसे सब क़ुदरतों का मालिक समझते हुए उससे मांगना और उसकी आज्ञाओं का पालन करना आवश्यक हैं। इसके लिए अल्लाह तआला ने हमें क़ुरआन जैसी महान किताब प्रदान की है जिस में अल्लाह तआला के सभी आदेश सभी आदेशों और निषेध हैं।

कुरआन में कई आदेश हैं जिनके करने या न करने का अल्लाह तआला ने हमें आदेश दिया है जिनकी हमें समय-समय पर जुगाली करते रहना चाहिए दोहराते रहना चाहिए। इस समय मैंने कुछ आदेश लिए हैं। सबसे बुनियादी आदेश जो हमें हर समय अपने सामने रखना चाहिए और जो मनुष्य के जन्म का उद्देश्य भी है वह अल्लाह तआला की इबादत करना है।

मस्जिदों में नमाज जमाअत के साथ अदा करना भी अल्लाह तआला के हुकमों में से आदेश है। इसलिए इस रमज़ान में वाकफीन जीवन जिनका वादा है कि हम दीन को दुनिया में प्राथमिकता करने वालों में सबसे आगे रहने वाले हम में से की अपनी सारी शक्तियों के साथ कोशिश करेंगे और उहदेदार जिन पर लोगों की नज़र है और उन्हें उन्होंने चुना भी हुआ है चुना है कि हम में अच्छा कर रहे हैं वे एक नमूना होना चाहिए। उन्हें इस बात की पूरी कोशिश करनी चाहिए कि केवल रमज़ान में ही नहीं कि रमज़ान में ही अल्लाह तआला के बताए हुए तरीके के अनुसार इबादत पर जोर नहीं देना और दिन ही नहीं गिनते रहें कि शेष तेरह दिन रह गए या बारह दिन रह गए तो हम अपनी पुरानी चाल पर या दिनचर्या पर आ जाऐंगे लेकिन यह प्रयास हो कि रमज़ान के प्रशिक्षण और मुजाहिद ने हमें जो इबादतों को ध्यान में सुधार पैदा किया है उसे हम अब स्थायी जीवन का हिस्सा बनाना है।

हम में से हर एक को यह चिंता सबसे पहले रखनी चाहिए कि हम अपने जीवन के लक्ष्य को पूरा करने वाले बनें और इस रमज़ान को भी रमज़ान के बाद भी हमारा ध्यान अल्लाह तआला की इबादत की ओर रहे और इसके लिए जो मस्जिदों की आबादी का आदेश है उसे हम अपने सामने रखें।

फिर एक आदेश कुरआन में अल्लाह तआला वादों को पूरा करने और उनके प्रतिबंध का दिया है। इसमें ख़ुदा तआला से किए हुए वादा भी हैं और बन्दों के वादा भी।

इस विषय को समझने की जरूरत है कि एक मोमिन ने अपने सभी वादों और समझौतों को पूरा करना है। अगर इस बात के महत्त्व और तथ्य को हम समझ लें तो हर प्रकार के झगड़ों और धोखों और आरोपों से हमारा समाज मुक्त हो सकता है। पारिवारिक मामलों में भी जो समस्याएं पैदा होते हैं वे भी कभी पैदा न हों क्योंकि वहाँ भी वादे तोड़े जा रहे होते हैं।

समझौतों को जब मनुष्य तोड़ता है तो झूठ का सहारा लेता है और झूठ के बारे में अल्लाह तआला ने बड़ी कठोर डरा कर इससे बचने का आदेश दिया है।

अल्लाह तआला का आदेश हमें यह है और मुत्तकियों की अल्लाह तआला ने एक निशानी बताई है कि وَ الْكٰظِمِيْنَ الْغَيْظَ وَ الْعَافِيْنَ عَنِ النَّاسِ क्रोध को दबाने वाले हैं और लोगों को माफ करने वाले हैं।

अल्लाह तआला ने हमें कुरआन करीम में कुधारणा और टोह लेने से बचने और ग़ीबत न करने का आदेश दिया है।

रमज़ान में जब हम चाहते हैं कि अल्लाह तआला का तक्वा धारण करें उस की नज़दीकी हमें मिले अपनी नमाज़ों को हम स्वीकार होता हुआ देखें तो इन बुराइयों से बचने और अल्लाह तआला के आदेश का पालन करने के लिए हमें बहुत अधिक कोशिश करनी चाहिए। अल्लाह तआला हमें इसकी ताकत प्रदान करे कि हम सभी आदेशों का पालन करते हुए उसके नज़दीकी पाने वाले हों और रमज़ान के बाद भी हम में यह नेकियाँ स्थिर रहें। हम अल्लाह तआला के वास्तविक आबिद बनें और हम इसी की पूर्ण आज्ञापालन करने वाले हों

आदरणीय चौधरी ख़लीक अहमद साहिब पुत्र चौधरी बशीर अहमद साहब क्षेत्र गुलज़ार हिजरी ज़िला कराची की शहादत, शहीद मरहूम का ज़िक्रे ख़ैर और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़,

दिनांक 24 जून 2016 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ۔

पिछले ख़ुत्बा में इस बात का उल्लेख किया था कि अल्लाह तआला फरमाता है कि दुआओं की स्वीकृति के लिए अल्लाह तआला पर पूर्ण ईमान और उसे सब कुदरतों का मालिक समझते हुए उससे मांगना और उसकी आज्ञाओं का पालन करना आवश्यक है। अल्लाह तआला के क्या आदेश हैं। पिछले ख़ुत्बा में भी उल्लेख हो चुका है कि इसके लिए अल्लाह तआला ने हमें क़ुरआन जैसी महान किताब प्रदान की है जिस में अल्लाह तआला के सभी आदेश, सभी आदेश और निषेध मौजूद हैं। अल्लाह तआला ने जब यह फरमाया कि "फल्यसतजीबू ली।" कि मेरे बन्दे मेरे आदेश को स्वीकार करें। वे आदेश जो कुरआन करीम में मौजूद हैं उन्हें स्वीकार करें इस के परिणाम स्वरूप अल्लाह तआला दुआएं भी स्वीकार करेगा और नेकी भी प्राप्त होगी। ख़ुदा तआला फरमाता है कि अंत में क्या परिणाम निकलेगा "लअल्ला हुम युरशेदून।" ताकि वे बन्दे हिदायत पाएं और इस हिदायत के कारण मेरी नज़दीकी के नज़ारे देखें। वह सीधे मार्ग पर चलने वाले हों। उन का मार्गदर्शन हो। नेकियों पर चलने वाले हों। बुराइयों से बचने वाले हों। अपने जन्म के उद्देश्य को भी पूरा करने वाले हों और उच्च नैतिकता पर चलते हुए एक दूसरे के पक्ष भी

निभाने वाले हों। क्या इन चीज़ों की ज़रूरत केवल रमज़ान में है जिसके साथ विशेष उल्लेख किया गया है।? अगर हम रमज़ान में अल्लाह तआला की आज्ञाओं का पालन करेंगे तो किया स्थायी हिदायत प्राप्त करने वाले हो जाएं कि केवल रमज़ान में पालन कर लिया।? रमज़ान तो जिन बातों के लिए विशेष रूप से याद दिलाने के लिए आता है और आया है कि इस प्रशिक्षण और चेष्ठा के महीने में हम प्रशिक्षण लेकर, कोशिश करके या मुजाहद: करने की कोशिश कर के एक दूसरे को देख कर अल्लाह तआला के क़रीब होने के रास्ते तलाश करें। सामूहिक और व्यक्तिगत रूप से अल्लाह तआला की आज्ञाओं का पालन कर के इस के हम करीब हों और अपनी दुआओं की स्वीकृति की गुणवत्ता प्राप्त करने की कोशिश करने वाले हों ताकि फिर हम स्थायी अल्लाह तआला की नज़दीकी प्राप्त करके अपनी अगली दुनिया संवारने वाले बन सकें। हम में से कुछ अच्छा पालन करने वाले हैं, बेहतर इबादतें करने वाले हैं बेहतर चरित्र वाले हैं। इसलिए इकट्ठा होते हैं एक साथ आते हैं और एक दूसरे को सामूहिक रूप से इन दिनों में देखने का मौका मिलता है तो इससे अपनी हालत की ओर भी ध्यान होता है।

कुरआन में कई आदेश हैं जिनके करने या न करने का अल्लाह तआला ने हमें आदेश दिया है। जिनकी हमें समय-समय पर जुगाली करते रहना चाहिए, दोहराते रहना चाहिए। इस समय मैंने कुछ आदेश लिए हैं।

सबसे बुनियादी आदेश जो हमें हर समय अपने सामने रखना चाहिए और जो मनुष्य के जन्म का उद्देश्य भी है वह अल्लाह तआला की इबादत करना है। जैसा कि अल्लाह तआला फरमाता है कि وَ مَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَ الْاِنْسَ اِلَّا لِيَعْبُدُوْنِ (अज़्ज़ारियात 57) हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इसका अनुवाद यूं फरमाया है कि "मैं ने जिन व अनस को इसलिए पैदा किया है कि वे मेरी इबादत करें।

(बराहीन अहमदिया भाग 3 रूहानी ख़ज़ायन भाग 1 पृष्ठ 185 हाशिया)

इस लेख को मैं कई बार वर्णन कर चुका हूँ। प्राय ध्यान दिलाता रहता हूँ, लेकिन हम में से बहुत से कुछ दिन इसे याद रखते हैं फिर भूल जाते हैं यहां तक कि मेरी जानकारी में भी है मैंने देखा है कि कुछ वाकफीन ज़िन्दगी बल्कि वे जिन्होंने धार्मिक ज्ञान भी प्राप्त किया हुआ है और ज्ञान के मामले में इसके महत्त्व को समझते भी हैं वे भी इस ओर ध्यान नहीं देते जिस तरह ध्यान देना चाहिए। फिर जमाअत के उहदेदार हैं मज्लिसों में तो अपनी बौद्धिक योग्यता दिखाने की कोशिश करते हैं। किसी का मामला पेश हो जाए तो उसे कुरआन और हदीस के बारे में समझाते हैं लेकिन कुछ ऐसे हैं खुद इस बुनियादी आदेश पर वे ध्यान नहीं जो होना चाहिए।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्ससलाम एक जगह फरमाते हैं कि

"तुम इस बात को समझ लो कि तुम्हारे बनाने से ख़ुदा तआला की इच्छा है कि तुम उसकी इबादत करो और इसके लिए बन जाओ। दुनिया तुम्हारा मूल उद्देश्य न हो। मैं इसलिए बार बार इस बात का वर्णन करता हूँ कि मेरे पास यही एक बात है जिसके लिए इंसान आया है। और यही बात है जिस से वे दूर पड़ा हुआ है।"

(मल्फूज़ात भाग 1 पृष्ठ 183-184 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

आप अलैहिस्सलाम ने इस बात की आगे व्याख्या फरमाई कि दुनिया को उद्देश्य न करने से यह मतलब नहीं है कि तुम सांसारिक काम न करो बेशक वह भी करो लेकिन जो इबादत की ज़िम्मेदारी है बल्कि जो जन्म का उद्देश्य है वह तुम्हारी सर्वोच्च प्राथमिकता होनी चाहिए।

आजकल रमज़ान में इस पर सामान्यत: पालन हो रहा है। रात इशा की नमाज़ भी पश्चिमी देशों में बहुत देर से होती है। नमाज़ समाप्त होते होते ग्यारह सवा ग्यारह बज ही जाते हैं। फिर कुछ तरावीह भी पढ़ते हैं। मस्जिदों में तरावीह की भी व्यवस्था है। घर जाकर सोते सोते बारह साढ़े बारह बज जाते हैं। फिर दो अढ़ाई बजे सहरी खाने के लिए जागते भी होंगे। कुछ नफिल भी पढ़ते हैं। मस्जिद में नमाज़ पर भी आते हैं। तो यह बात प्रमाणित करती है कि अगर इरादा हो, केवल ज्ञान के महत्त्व का ही पता न हो बल्कि व्यावहारिक कोशिश भी हो तो इबादत का जो सबसे अच्छा स्थान है नमाज़ इसमें सुस्ती न दिखाएँ बल्कि कोशिश कर के आया करें। मस्जिदों में नमाज़ जमाअत के साथ अदा करना भी अल्लाह तआला के हुकमों में से आदेश है। इसलिए इस रमज़ान में वाकफीन ज़िन्दगी जिनका वादा है कि हम धर्म को दुनिया में प्राथमिकता करने वालों में सबसे आगे रहने वालों में से अपनी सारी शक्तियों के साथ कोशिश करेंगे और उहदेदार जिन पर लोगों की नज़र है और उन्हें उन्होंने चुना भी इस लिए हुआ है, चुना है कि हम में अच्छा कर रहे हैं वे एक नमूना होने चाहिए। उन्हें इस बात की पूरी कोशिश करनी चाहिए कि केवल रमज़ान में ही अल्लाह तआला के बताए हुए तरीके के अनुसार इबादत पर जोर नहीं देना और दिन ही नहीं गिनते रहें कि शेष तेरह दिन रह गए या बारह दिन रह गए तो हम अपनी पुरानी चाल पर या दिनचर्या पर आ जाऐंगे बल्कि यह प्रयास हो कि इस रमज़ान के प्रशिक्षण और मुजाहिदा ने हमें जो इबादतों को ध्यान में सुधार पैदा किया है उसे हम अब स्थायी जीवन का हिस्सा बनाना है। अपने नमूने स्थापित करने हैं। जैसा कि मैंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उद्धरण पेश किया जिसमें आप ने बड़े दर्द से यह ध्यान दिलाया और फरमाया कि मैं बार बार ध्यान दिलाता हूं। इस बारे में कुछ और अंश प्रस्तुत करता हूँ जिससे इसकी अधिक व्याख्या होती है।

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक जगह फरमाते हैं

"जब ख़ुदा तआला का इरादा मानव सृष्टि से केवल इबादत है तो मोमिन की शान नहीं कि किसी दूसरी चीज़ को मूल उद्देश्य बना ले। नफस के अधिकार तो वैध हैं मगर नफस का सीमा से बढ़ जाना जायज़ नहीं। नफस के अधिकार भी इसलिए मान्य हैं कि ताकि वह क्षीण होकर रह ही न जाएं। तुम भी उन चीजों को इस लिए काम में लाओ। उनसे काम इसलिए लो कि यह तुम्हें इबादत के योग्य बनाए रखें। न इसलिए कि वही तुम्हारा मूल उद्देश्य हों।"

(मल्फूज़ात भाग 5 पृष्ठ 248-249 प्रकाशन 1985 ई)

नफस के अधिकार के अदा करने का हदीस में उल्लेख आया है। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तुम्हारे नफस का भी तुम पर अधिकार है। (बुख़ारी किताबुस्सौम हदीस 1968)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि वास्तव में यह सही है लेकिन इसमें मध्य मार्ग होना चाहिए। नफस के जो वैध अधिकार हैं वे अदा करो क्योंकि यह अधिकार अल्लाह तआला ने मानव प्रकृति में रखे हैं इसलिए उन्हें अदा करना तो बहरहाल आवश्यक है। उन्हें अपने लाभ और उपयोग में लाओ वरना कई चीज़ें ऐसी हैं अगर उन्हें इस्तेमाल न किया जाए पूरा हक न अदा किया नफ्स का तो कुछ इन्द्रियां समाप्त हो जाती हैं और जो मानव जन्म का लक्ष्य नहीं है बल्कि इबादत के उद्देश्य के साथ ही इन चीजों का इस्तेमाल करना भी आवश्यक है। अल्लाह तआला की पैदा किए हुए गुणों और शक्तियों का उपयोग करना ज़रूरी है और न प्रयोग करना अल्लाह तआला का कृतघ्न है। एक सहाबिया थीं। उनका बुरा हाल था। न तैयार होती थीं न कंघी करती थीं किसी ने उनके बारे में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में निवेदन किया कि इस तरह रहती हैं। आपने बुला भेजा। उन्होंने कहा, मैं किसके लिए तैयार हूँ।? मेरे पति तो दिन को भी इबादत करता है रात में भी इबादत करता है। तो आप ने पति को बुलाकर कहा कि तुम्हारे नफस का भी तुम पर हक है तुम्हारी पत्नी का भी तुम पर हक है।

(मुस्नद अहमद बिन हंबल भाग 8 पृष्ठ 531 हदीस 26839 मुस्नद हज़रत आयशा प्रकाशक अलमुल कुतब बैरूत 1998 ई)

इसलिए अधिकार हर तरह के अदा होने चाहिए लेकिन जो जन्म का लक्ष्य है उसे बहरहाल सामने रखना चाहिए। स्वयं के अधिकार भी अदा होंगे तो सेहत रहेगी और जब सेहत रहेगी तो इबादत भी सही ढंग से हो सकेगी।

फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं

"कि अनुचित उपयोग से हलाल भी हराम हो जाता है। फरमाया कि وَ مَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَ الْاِنْسَ اِلَّا لِيَعْبُدُوْنِ (अज़्ज़ारियात 57)से स्पष्ट है कि मनुष्य केवल इबादत के लिए बनाया गया है अत: इस लक्ष्य को पूरा करने के लिए जितनी चीज़ की आवश्यकता है अगर अधिक लेता है तो यद्यपि वह वस्तु हलाल ही हो मगर व्यर्थ के कारण से उसके लिए हराम हो जाती है।" प्रत्येक वस्तु का वैध उपयोग ठीक है लेकिन अगर अत्यधिक उपयोग है तो वह हलाल भी हराम हो जाता है। फरमाया कि " जो मनुष्य रात दिन नफस के सुख में व्यस्त है वह इबादत का क्या हक़ अदा कर सकता है। मोमिन के लिए आवश्यक है कि वह एक कठोर जीवन व्यतीत करे लेकिन विलासिता में जीने से तो वह जीवन का कुछ भी अंश प्राप्त नहीं कर सकता।"

(मल्फूज़ात भाग 7 पृष्ठ 68 प्रकाशन 1985 ई)

फिर फरमाते हैं कि

"मूल उद्देश्य मनुष्य की सृष्टि का यह है कि वे अपने रब को पहचाने और उसका अनुपालन करे जैसा कि अल्लाह तआला ने फरमाया وَ مَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَ الْاِنْسَ اِلَّا لِيَعْبُدُوْنِ (अज़्ज़ारियात 57) मैंने जिन व इनसान को इसलिए पैदा किया है कि वे मेरी उपासना करें मगर अफसोस की बात है कि प्राय लोग जो दुनिया में आते हैं वयस्क होने के बाद बजाय अपने कर्तव्य को समझें और अपने जीवन के

उद्देश्य को ध्यान में रखें वह ख़ुदा तआला को छोड़कर दुनिया की ओर आकर्षित हो जाते हैं और संसार की संपत्ति और उसके सम्मानों के ऐसे शौक़ीन हैं कि ख़ुदा का हिस्सा बहुत ही छोटा होता है और कई लोगों के मन में तो होता ही नहीं कि वह दुनिया में डूब जाते हैं और फना हो जाते हैं। उन्हें ख़बर भी नहीं होती कि ख़ुदा भी कोई है। हां तब पता लगता है जब रूहों का निकालने वाला आकर जान निकाल लेता है।

(अल्हकम 24 सितम्बर 1904 ई पृष्ठ 1 जिल्द 8 नम्बर 32 उद्धरित तफसीर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

दुनिया के झनझटों से, दुनिया के कामों से उस समय निकलते हैं जब मौत का समय आता है, लेकिन बहुमत दुनिया वालों की तो ऐसी है कि मृत्यु के समय भी उन्हें सांसारिक धन और इसे संभालने की चिंता होती है। एक मोमिन की यह हालत नहीं होती लेकिन मौत के समय केवल इस ओर ध्यान हो कि दुनिया कैसे संभालनी है बल्कि सेहत में बहुत से ऐसे हैं कि ईमान लाने के बावजूद जो इस लक्ष्य को भूलकर जो जीवन का उद्देश्य है सांसारिक लक्ष्यों की खोज में अधिक चिंतित हैं। अत: हम में से हर एक को यह चिंता सबसे पहले रखनी चाहिए कि हम अपने जीवन के लक्ष्य को पूरा करने वाले बनें। और इस रमज़ान में भी और रमज़ान के बाद भी हमारा ध्यान अल्लाह तआला की इबादत की ओर रहे और इसके लिए जो मस्जिदों की आबादी का आदेश है उसे हम अपने सामने रखें।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक स्थान पर फरमाया कि "मनुष्य के मन में ख़ुदा की निकटता को प्राप्त करने का एक दर्द होना चाहिए, ख़ुदा की नज़दीकी हासिल करने का एक दर्द होना चाहिए। जिसके कारण से उसके यानी ख़ुदा तआला के निकट वह सार्थक चीज़ हो जाए।"

(मल्फूज़ात भाग 7 पृष्ठ 289 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

जब अल्लाह तआला के सानिध्य को पाने का दर्द होगा तो अल्लाह तआला के निकट वह मनुष्य मूल्यवान चीज़ बन जाता है।

इसलिए जो अल्लाह तआला के निकट सार्थक चीज़ हो जाए वही है जो वास्तविक नेकी पाने वाला वास्तविक हिदायत पाने वाला है और अल्लाह तआला के प्यार को पाने वाला है। अल्लाह तआला ने नमाज़ और इबादत के विषय को और भी बहुत जगह उल्लेख किया है। सूर: नूर में अल्लाह तआला फरमाता है कि

رِجَالٌ ۙ لَّا تُلْهِيْهِمْ تِجَارَةٌ وَّ لَا بَيْعٌ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَ اِقَامِ الصَّلٰوةِ وَ اِيْتَآءِ الزَّكٰوةِ ۪ يَخَافُوْنَ يَوْمًا تَتَقَلَّبُ فِيْهِ الْقُلُوْبُ وَ الْاَبْصَارُ (अन्नूर 38)

कि ऐसे पुरुष जिन्हें न कोई व्यापार और न कोई खरीदना और बेचना अल्लाह तआला के स्मरण से या नमाज़ की स्थापना या ज़कात के अदा करने से असावधान करता है वह उस दिन से डरते हैं जिस में दिल डर से उलट पलट हो रहे होंगे और आँखें भी। इस आयत में उन लोगों का उदाहरण है जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने लिखा है कि वह ख़ुदा तआला के निकट सार्थक चीज़ हो जाएगा और यह सम्मान सबसे बढ़कर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा को मिला है और वह अल्लाह तआला के प्यारे बने और अपने सहाबा के बारे आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमें फरमाया है कि वह तुम्हारे लिए रास्ता दिखाने वाले हैं उनके पीछे चलो।

(मिश्कातुल मसाबीह भाग 2 जिल्द 2 पृष्ठ 414 किताबुल मनाकिब अस्सहाबा हदीस 6018 प्रकाशक दारुल कुतुब अलइलमिया बैरूत 2003 ई)

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस आयत की व्याख्या में फरमाते हैं कि एक व्यक्ति का उल्लेख "तज़करतुल औलिया" में है कि एक व्यक्ति असंख्य रुपये के लेनदेन में व्यस्त था। एक वली उल्लाह ने उसे देखा और कश्फ की निगाह उस पर डाली तो उसे मालूम हुआ कि उसका दिल बावजूद इतने लेनदेन(के, कारोबार कर रहा है, पैसा आ रहा है, माल दे रहा है, ज़ाहिरी तौर पर व्यापार में व्यस्त है बावजूद इतना लेनदेन और) रुपए के ख़ुदा तआला से एकदम अनजान नहीं था। (कारोबार भी साथ कर रहा है लेकिन अल्लाह तआला से बेखबर नहीं हुआ। आप फरमाते हैं कि) ऐसे ही लोगों के बारे में ख़ुदा ने फरमाया है कि لَا تُلْهِيْهِمْ تِجَارَةٌ وَّلَا بَيْعٌ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ कोई व्यापार और ख़रीद-फरोख्त उन्हें अनजान नहीं करती और मनुष्य का कमाल भी यही है कि सांसारिक कारोबार में भी व्यस्तता रखे और ख़ुदा को भी न भूले।" फरमाते हैं कि "वे टट्टू किस काम का जो समय पर बोझ लादने के बैठ जाता है और जब खाली हो तो ख़ूब चलता है। वह सराहनीय नहीं।" (टट्टू भी घोड़े की एक किस्म है जो बोझ लादने के लिए पहाड़ी क्षेत्रों में विशेष रूप से इस्तेमाल किया जाता है।) फिर आप फरमाते हैं कि वह फकीर जो सांसारिक कार्यों से घबरा कर एकान्त वास हो जाता है वह एक कमज़ोरी दिखलाता है। (यह पहलू भी सामने होना चाहिए। इबादत लक्ष्य है लेकिन सांसारिक काम भी साथ साथ हों। जो फकीर एकान्त वास हो जाते हैं फरमाया कि वह कमज़ोरी दिखलाते हैं।) "इस्लाम में रहबानियत नहीं। हम कभी नहीं कहते कि महिलाओं और बाल-बच्चों को छोड़ दो और सांसारिक कारोबार को छोड़ दो। बल्कि कर्मचारी को चाहिए कि वह अपनी नौकरी के कर्तव्यों को अदा करे और व्यापारी अपने व्यापार के कारोबार को पूरा करे लेकिन धर्म को प्राथमिकता दे।" (यह शर्त है। इसका उदाहरण ख़ुद दुनिया में मौजूद है।) आप फरमाते हैं "इसका उदाहरण दुनिया में मौजूद है कि व्यापारी और कर्मचारी बावजूद इसके कि वह अपने व्यापार और रोज़गार को बहुत उत्कृष्टता से पूरा करते हैं फिर भी पत्नी बच्चे रखते हैं और उन के अधिकार बराबर अदा करते हैं।" (एक ओर व्यापार भी है रोज़गार भी हैं लेकिन घर की ज़िम्मेदारियां हैं बच्चों की ज़िम्मेदारी है। पत्नी के अधिकार हैं वे भी निभा रहे हैं। दोनों बातें साथ चल रही होती हैं। फरमाया कि "ऐसा ही एक इंसान इन सभी व्यवस्ताओं के साथ ख़ुदा तआला के अधिकार को निभा सकता है और धर्म को दुनिया में प्रथम रखकर बड़ी उत्कृष्टता से जीवन बिता सकता है।

(मल्फूज़ात भाग 9 पृष्ठ 206-207 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

नमाज़ों की सुरक्षा के बारे में ख़ुदा तआला फरमाता है कि حٰفِظُوْا عَلَى الصَّلَوٰتِ وَ الصَّلٰوةِ الْوُسْطٰى ۗ وَ قُوْمُوْا لِلّٰهِ قٰنِتِيْنَ (अल्बकरह: 239) कि अपनी नमाज़ों की रक्षा करो विशेष कर केंद्रीय नमाज़ और अल्लाह तआला का अनुपालन करते हुए खड़े हो जाओ। इस आयत में विशेष रूप से उन लोगों के लिए नमाज़ की ओर ध्यान दिलाया गया है जिनके लिए कोई भी नमाज़ किसी भी तरह बोझ है। अगर सुबह की नमाज़ में देर रात तक जागने और सुस्ती के कारण शामिल होना मुश्किल है समय पर पढ़ना मुश्किल है तो यह ऐसे व्यक्ति के लिए मध्य नमाज़ है। अगर व्यापारी आदमी के लिए ज़ुहर अस्र की नमाज़ पढ़ना मुश्किल है तो यह उसके लिए मध्य नमाज़ है। "हाफज़ू" का अर्थ है कि ऐसी रक्षा जो किसी चीज़ को नष्ट होने से बचाए। अत: एक मोमिन की आज्ञा पालन तभी होता है जब वह अपनी नमाज़ समय पर अदा करने वाला हो और उनका हक़ अदा करते हुए नमाज़ अदा करने वाला हो। यह नहीं कि जल्दी-जल्दी आए और टकरें मार के चले गए।

फिर एक आदेश कुरआन में अल्लाह तआला ने वादों को पूरा करने और उनकी पाबन्दी का दिया है। इसमें ख़ुदा तआला से किए हुए वादे भी हैं और बन्दों के वादे भी। अल्लाह तआला के वादे अल्लाह तआला के धर्म के बारे में अहद हैं। मुसलमान होने और फिर हम अहमदियों को विशेष रूप से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बैअत में आने का जो वादा है। धर्म को दुनिया पर प्राथमिकता देने का जो हमने वादा किया है, इस्लाम की शिक्षा का पालन करने का जो हमने वादा किया है इन सभी बातों की पाबन्दी की प्रतिज्ञा है जो अल्लाह तआला के हक़ अदा करने के लिए ध्यान दिलाते हैं। बैअत के शर्तों में सारी बातें शामिल हैं और बन्दा का हक़ अदा करने की तरफ भी ध्यान दिलाती हैं। इस तरफ हमें ध्यान देना चाहिए। अल्लाह तआला फरमाता है कि وَ اَوْفُوْا بِعَهْدِ اللّٰهِ اِذَا عٰهَدْتُّمْ وَ لَا تَنْقُضُوا الْاَيْمَانَ بَعْدَ تَوْكِيْدِهَا وَ قَدْ جَعَلْتُمُ اللّٰهَ عَلَيْكُمْ كَفِيْلًا ۭ اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا تَفْعَلُوْنَ

(अन्नहल: 92) और तुम अल्लाह तआला के वादे को पूरा करो जब तुम प्रतिज्ञा करो और कस्मों को उनके मज़बूत करने के बाद न तोड़ो जबकि अल्लाह तआला को अपने ऊपर प्रायोजक बना चुके हो अल्लाह तआला वास्तव में जानता है जो कुछ तुम करते हो।

इसलिए बड़ा स्पष्ट आदेश है कि तुम्हारे दो अहद हैं। एक अल्लाह तआला से क्या हुआ वादा जो वास्तव में इस्लाम की शिक्षा पर चलने का वादा है और बैअत की प्रतिज्ञा है। यह सकंल्प है कि इस्लाम में दाख़िल होकर मुसलमान कहला कर अल्लाह तआला की सभी आज्ञाओं का पालन करूंगा और दूसरी बात यह वर्णन कि तुम आपस में जो वादा और प्रतिज्ञा करते हो उन्हें भी पूरा करो। यद्यपि यहाँ अल्लाह तआला ने फरमाया है कि जब अल्लाह तआला को आप ज़मानत वाला बना लिया तो तुम्हारा इस वादा को पूरा करना आवश्यक है। इसका यह हरगिज़ अर्थ नहीं कि जहां स्पष्ट रूप से अल्लाह तआला का नाम लेकर अल्लाह तआला को ज़मानत वाला न बनाया जाए वहां वादा तोड़ दो तो कोई हर्ज नहीं। अपनी कस्मों को तोड़ दो तो कोई हर्ज नहीं प्रतिज्ञा का पालन न करो तो कोई हर्ज नहीं। नहीं बल्कि हर वादा जो तुम क्या करते हो हर अनुबंध जो तुम करते हो वह पहली बात तो यह है कि न्याय और सच्चाई पर आधारित होनी चाहिए और जब न्याय और सत्य का आधार बना कर करते हो तो अल्लाह तआला का यह आदेश है कि इसी तरह होना चाहिए क्योंकि

एक मोमिन न्याय और सत्य पर स्थिर होना ज़रूरी है। मानो दूसरे शब्दों में चाहे हम अल्लाह तआला की क़सम खा कर या उसे ज़मानत वाला बनाकर कोई अनुबंध करें या नहीं लेकिन क्योंकि अल्लाह तआला की शिक्षा है कि तुम न्याय और सत्य पर स्थिर रहो,इसलिए जो सन्धि भी न्याय और सत्य पर आधारित होगी वह अल्लाह तआला की गारंटी के नीचे आ जाएगी। तो इस विषय को समझने की ज़रूरत है कि एक मोमिन ने अपने सभी वादों और समझौतों को पूरा करना है। अगर इस बात के महत्त्व और तथ्य को हम समझ लें तो हर प्रकार के झगड़ों और धोखों और आरोपों से हमारा समाज मुक्त हो सकता है। पारिवारिक मामलों में भी जो समस्याएं पैदा होते हैं वे भी कभी पैदा न हों क्योंकि वहाँ भी वादे तोड़े जा रहे हैं आजकल मैंने देखा है सांसारिक लालचों के कारण हमारे अंदर भी अनुबंधों को तोड़ने और धोखा देने और ज़बान की स्वीकारोक्ति को पूरा न करने के मामले बढ़ रहे हैं और इन बातों से न केवल यह की जमाअत की बदनामी होती है बल्कि कई बार ऐसे लोगों का ईमान भी बर्बाद हो जाता है।

समझौतों को जब मनुष्य तोड़ता है तो झूठ का सहारा लेता है और झूठ के बारे में अल्लाह तआला ने बड़ा कठोर डरा कर इससे बचने का आदेश दिया है। फरमाता है فَاجْتَنِبُوا الرِّجْسَ مِنَ الْأَوْثَانِ وَاجْتَنِبُوا قَوْلَ الزُّوْرِ (अल्हज्ज: 31) मूर्तियों की गन्दगी से बचो और झूठ कहने के बचो। इस बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं

"मुझे इस समय इस नसीहत की ज़रूरत नहीं कि तुम खून न करो, (कत्ल न करो किसी का खून न बहाओ।) क्योंकि सिवाय बहुत अधिक दुष्ट के कौन ग़लत रूप से ख़ून की ओर कदम उठाता है, लेकिन मैं कहता हूँ कि अन्याय पर ज़िद करके के सच्चाई का खून मत करो। सच्चाई को स्वीकार कर लो चाहे एक बच्चे से। (यदि बच्चा भी कोई सच्ची बात कहता है तो स्वीकार कर लो फिर ज़िद मत करो) और यदि प्रतिद्वंद्वी की ओर सच को पाओ तो तुरन्त अपने सूखे तर्क को छोड़ दो। (अगर तुम्हारा विरोधी है और कोई सच्ची बात कहता है। लड़ाई झगड़े हो रहे हैं। देख लो कि दूसरी तरफ सच्चाई है तो बहस करने की ज़रूरत नहीं। फिर तर्क झाड़ने की जरूरत नहीं। फिर सत्य को स्वीकार करो।) फरमाया कि सच पर ठहर जाओ और सच्ची गवाही दो जैसा कि प्रतापी अल्लाह तआला फरमाता है فَاجْتَنِبُوا الرِّجْسَ مِنَ الْأَوْثَانِ وَاجْتَنِبُوا قَوْلَ الزُّوْرِ अर्थात मूर्तियों की गन्दगी से बचो और झूठ से भी कि वह मूर्ति से कम नहीं है। जो चीज़ सच्चाई की ओर से तुम्हारा मुंह फेरती है वह तुम्हारी राह में बुत है। (जो सच्चाई अपनाने से तुम्हें हटा दे वह बुत है। सच्ची गवाही दो चाहे तुम्हारे बापों या भाइयों या दोस्तों पर हो। चाहिए कि कोई वैर भी तुम्हें इंसाफ से रोकने वाली न हो।"

(इज़ाला औहाम ,रूहानी ख़ज़ायन भाग 3 पृष्ठ 550)

हम दूसरों को तो यह बात बताते हैं और कुरआन की यह शिक्षा दिखाते हैं कि यह न्याय की शिक्षा है लेकिन बहुत सारे हम में से ऐसे हैं जब हमारे अपने मामले आते हैं तो इस बात को भूल जाते हैं।

फिर एक अवसर पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि

"मूर्ति पूजा के साथ इस झूठ को मिलाया है। (झूठ को मूर्ति पूजा के साथ मिलाया है।) जैसा मूर्ख इंसान अल्लाह तआला को छोड़कर पत्थर की तरफ सिर झुकाता है वैसे ही सच्चाई और सत्यता को छोड़ कर अपने मतलब के लिए झूठ को मूर्ति बनाता है। यही कारण है कि अल्लाह तआला ने उसे मूर्ति पूजा के साथ मिलाया और इस से तुलना दी है जैसे एक बुत की पूजा करने वाला उस से मुक्ति चाहता है। (अर्थात मूर्ति बनाकर उसके पास पूजा करने के लिए जाता है, समझता है कि मैं इसकी इबादत करूंगा या अपने गुनाहों की क्षमा मांगूंगा तो मुझे मुक्ति मिल जाएगी या मेरे लक्ष्य हल हो जाएंगे।) फरमाया कि "झूठ बोलने वाला भी अपनी ओर से मूर्ति बनाता है और समझता है कि इस मूर्ति के द्वारा उद्धार हो जाएगा।" (मैं झूठ बोलूँगा तो मेरा मामला तय हो जाएगा) फरमाया "कैसी त्रुटि आकर पड़ी है अगर कहा जाए कि क्यों बुत की इबादत करते हो इस दोष को छोड़ दो। तो कहते हैं क्यों छोड़ दें इस के बिना गुज़ारा नहीं होता। इससे बढ़कर और क्या दुर्भाग्य होगा कि झूठ पर अपना अधिकार समझते हैं मगर मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि आख़िर सच ही सफल होता है। भलाई और जीत उसी की है निसन्देह याद रखो झूठ जैसी कोई मनहूस बात नहीं। आमतौर पर दुनियादार कहते हैं कि सच बोलने वाले गिरफ्तार होते हैं मगर मैं कैसे इसे विश्वास करूं ? मुझ पर सात मुकद्दमे हुए हैं और ख़ुदा तआला की कृपा से किसी एक में भी एक शब्द भी मुझे झूठ कहने की जरूरत नहीं पड़ी। कोई बताए कि किसी एक में भी ख़ुदा तआला ने मुझे पराजित किया हो। अल्लाह तआला तो आप सच्चाई का समर्थक और सहायक है यह हो सकता है कि वह नेकों को सज़ा दे? (यह कैसे हो सकता है) अगर ऐसा हो तो दुनिया में कोई व्यक्ति सच बोलने का साहस न करे।" (यदि सच्चों को सज़ा मिलनी शुरू हो जाए तो फिर तो कोई दुनिया में कोई सच बोले ही न) फरमाया और "ख़ुदा तआला पर से ही विश्वास उठ जाए। सच्चे तो ज़िंदा ही मर जाएं। मूल बात यह है कि सच बोलने से जो सज़ा पाते हैं। (सच बोला और अगर फिर भी सज़ा मिल गई) तो वह सच के कारण से नहीं होती वह सज़ा उन्हें कुछ और छिपी हुई बुराइयों की होती है और किसी और झूठ की सज़ा होती है। ख़ुदा तआला के पास तो उनकी बुराइयों और कुटिलता की एक श्रृंखला है। उनकी कई अपराध होते हैं और किसी न किसी में वह सज़ा पा लेते हैं।"

(अहमदी और ग़ैर अहमदी में किया अन्तर है? रूहानी ख़ज़ान भाग 20 पृष्ठ 478-480)

तो अल्लाह तआला के सामने हमेशा विनम्रता से झुकते हुए हमें अपने गुनाहों की क्षमा मांगते रहना चाहिए कि अल्लाह तआला की पकड़ में हम अपने किसी छुपे हुए गुनाह के कारण से न आ जाएं।

अल्लाह तआला का हमें यह आदेश है और मुत्तकियों की अल्लाह तआला ने एक निशानी यह बताई है कि

وَالْكٰظِمِيْنَ الْغَيْظَ وَالْعَافِيْنَ عَنِ النَّاسِ ؕ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ

(आले इम्रान :135) क्रोध को दबाने वाले और लोगों को माफ करने वाले हैं। "अफ़ू" का अर्थ है कि अपने ख़िलाफ किए गए अपराध को पूरी तरह से भुला कर किसी को माफ कर देना। यह "अफ़ू" है। इसलिए मुत्तकी वह है जो न केवल क्रोध को दबाने वाला हो बल्कि माफ करने वाला भी हो और फिर माफ इस तरह करे कि जिसने भी मेरे ख़िलाफ अपराध किया है उसे मैं भूल जाऊं। इस बारे में स्पष्टीकरण फरमाते हुए कि क्रोध को दबाने के क्या लाभ हैं हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि

"याद रखो कि बुद्धि और जोश में ख़तरनाक दुश्मनी है। जब जोश और ग़ुस्सा आता है तो बुद्धि कायम नहीं रह सकती लेकिन जो धैर्य करता है और विवेक का नमूना दिखाता है उसे एक नूर दिया जाता है जिससे उसकी बुद्धि और चिंता की ताकतों में एक नई रोशनी पैदा हो जाती है और फिर नूर से नूर पैदा होता है। ग़ुस्सा और जोश की हालत में जब मन में अंधेरे होते हैं इसलिए फिर अंधेरे से अंधेरा पैदा होता है।"

(मल्फूज़ात भाग 3 पृष्ठ 180 प्रकाशन 1985 ई यू.के)

फिर एक जगह आप ने फरमाया कि "याद रखो जो व्यक्ति सख्ती करता है और क्रोध में आ जाता है उसकी ज़बान से ज्ञान और हिकमत की बातें कभी नहीं निकल सकतीं। वह दिल ज्ञान की बातों से वंचित किया जाता है जो अपने प्रतिद्वंद्वी के सामने शीघ्र क्रोध में आकर आपे से बाहर हो जाता है। गंदी भाषा और बेलगाम होकर होंठ अच्छी बातों के चश्मे से हतभागी और वंचित की जाती है।" (जब गंदी बातें निकलती हैं। गंदे शब्द निकल रहे हों गालियां निकल रही हों तो कोई उस पर रोक टोक नहीं होती। तो फिर जो अच्छी बातें हैं जो अल्लाह तआला की तरफ से बातें हैं जो नेकी की बातें हैं उन से फिर वंचित हो जाती है। फिर हमेशा ऐसे लोग गंद ही बकते हैं।) फरमाया कि "क्रोध और ज्ञान दोनों जमा नहीं हो सकते। जो गज़ब के अधीन होता है उसकी बुद्धि मोटी और बुद्धि कुंद होती है। (गुस्से में आ गए तो मोटी बुद्धि हो गई और फिर सोचने समझने की योग्यता भी समाप्त हो जाती हैं।) फरमाया कि (इस को किसी क्षेत्र में प्रभुत्व और सहायता नहीं दी जाती। "गज़ब आधा जुनून है जब यह भड़का है तो पूरा जुनून हो सकता है।"

(अल्हकम 10 मार्च 1903 ई पृष्ठ 1 जिल्द 7 नम्बर 9 उद्धरित तफसीर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम भाग 2 पृष्ठ 153)

फिर एक अवसर पर आप ने फरमाया कि "मर्द को चाहिए कि अपनी शक्तियों को यथा योग्य और वैध अवसर पर प्रयोग करे। जैसे एक शक्ति ग़ज़ब की है जब वह मामूली से अधिक हो तो जुनून का पूर्वावलोकन होती है। जुनून और इसमें बहुत थोड़ा अंतर है। (क्रोध और जुनून में, पागलपन में बहुत थोड़ा अंतर है) जो आदमी गज़ब के अधीन होता है इस से हिक्मत का स्रोत छीन लिया जाता है बल्कि अगर कोई विरोधी हो तो भी ग़ज़ब के अधीन हो कर बातचीत न करे।

(मल्फूज़ात भाग 5 पृष्ठ 208 प्रकाशन 1985 ई यू.के)

अगर कोई तुम्हारा विरोधी भी है तब भी ग़ुस्सा में आकर ऐसे उग्र होकर बात न करो बल्कि फिर भी हिक्मत से बात करनी चाहिए। अत: अल्लाह तआला के आदेश जहां हमारी नैतिक तरक्की करके हमें अल्लाह तआला की निकटता दिलाते है वहाँ हमारी अकलों को भी तेज़ी प्रदान करते हैं और इसके साथ कई शत्रुताओं और नुकसानों से भी व्यक्ति बच जाता है। अक्सर ग़ुस्सा में आने वालों और लड़ने वालों को नुकसान उठाते ही देखा गया है। कभी लाभ तो नहीं हुआ।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक जगह फरमाते हैं कि

"दो ताकतें मनुष्य को जुनूनी बना देती हैं (कौन सी दो शक्तियां?।) एक कुधारणा और एक प्रकोप जबकि सीमा से अधिकता को पहुँच जावें। (जब सीमा तक पहुँच जाएं तो यह बातें तो इंसान को पागल बना देती हैं।) इसलिए आवश्यक है कि मनुष्य कुधारणा और क्रोध से बहुत बचे। आपने फरमाया अनिवार्य है कि इंसान कुधारणा और क्रोध से बहुत बचे।

(मल्फूज़ात भाग 6 पृष्ठ 104 प्रकाशन 1985 ई यू.के)

कुधारणा से बचने के लिए अल्लाह तआला ने हमें कुरआन में भी आदेश दिया है। अल्लाह तआला फरमाता है कि يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اجْتَنِبُوْا كَثِيْرًا مِّنَ الظَّنِّ ۫ اِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ اِثْمٌ وَّلَا تَجَسَّسُوْا وَلَا يَغْتَبْ بَّعْضُكُمْ بَعْضًا ؕ اَيُحِبُّ اَحَدُكُمْ اَنْ يَّاْكُلَ لَحْمَ اَخِيْهِ مَيْتًا فَكَرِهْتُمُوْهُ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ تَوَّابٌ رَّحِيْمٌ (अल्हुजरात :13)

हे लोगो जो ईमान लाए हो कुधारणा से बहुत अधिक बचो बेशक कुछ कुधारणाएं गुनाह होते हैं और जिज्ञासा न किया करो और तुम में से कोई एक दूसरे की चुग़ली न करे। किया तुम में से कोई यह पसंद करता है कि अपने मृत भाई का मांस खाए अत: तुम इससे सख्त घृणा करते हो और अल्लाह तआला का तक्वा धारण करो। बेशक अल्लाह तआला तौबा स्वीकार करने वाला और बार बार दयालु है।

इस आयत में पहली बात जिससे बचने का उल्लेख है वह कुधारणा है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि "कुधारणा ऐसा रोग और ऐसी बुरी बला है जो इंसान को अंधा कर के आदमी को मौत के अंधेरे कुएं में गिरा देती है।

(मल्फूज़ात भाग 1 पृष्ठ 100 प्रकाशन 1985 ई यू.के)

फिर फरमाया "ख़ूब याद रखो कि सारी बुराईयां और दोष कुधारणा से पैदा होती हैं इसलिए अल्लाह तआला ने उस से बहुत मना किया है।" फरमाया कि "मनुष्य कुधारणा से बहुत ही बचे। अगर किसी के बारे में कोई कुधारणा पैदा हो।" (कोई बुरी शंका पैदा भी हो तो) बहुतायत के साथ इस्तिग़फ़ार करे।(एक दूसरे के बारे में कुधारणा पैदा हुई है तो बजाय इस को दिल में जगह देने के, इस पर सोचने के या फिर दूसरे को उसके कारण नुकसान करने के बजाय इस्तिग़फ़ार करना चाहिए कि किसी के बारे में शंका पैदा हुई है।) फरमाया "बहुतायत के साथ इस्तिग़फ़ार करे और ख़ुदा तआला से दुआ करे ताकि इस अवहेलना और इसके बुरे परिणाम से बच जाए।" (इस गुनाह से बचे और गुनाह के कारण के कारण से जो बुरे परिणाम पैदा होने हैं इन से बच सके) "जो इस कुधारणा के पीछे आने वाला है। उसे कोई मामूली बात नहीं समझना चाहिए। यह बहुत ख़तरनाक बीमारी है।"

(मल्फूज़ात भाग 1 पृष्ठ 371-372 प्रकाशन 1985 ई यू.के)

फिर इस आयत में दूसरी बात जिस से अल्लाह तआला ने हमें रोका है जिज्ञासा करना है। खोद खोदकर किसी की बुराई या किसी भी बारे में जिज्ञासा करना। जो चीज़ कोई बताना न चाहता हो उसके बारे में निश्चित रूप से एक कोशिश करना कि मेरे ज्ञान में आ जाए। यह बातें ग़लत हैं इससे भी बुराईयां पैदा होती हैं।

फिर तीसरा आदेश यह है कि ग़ीबत मत करो। चुग़ली करना ऐसा ही है जैसा किसी ने अपने मृत भाई का मांस खाया और इस से तुम सख्त घृणा करोगे। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से ग़ीबत के बारे में पूछा गया तो आप ने फरमाया कि किसी की सच्ची बात का इस के अभाव में इस तरह वर्णन करना कि यदि वह मौजूद है तो उसे बुरा लगे। तो यह ग़ीबत है। किसी की सच्ची बात उसकी अनुपस्थिति में वर्णन करना चाहे सच्ची बात ही हो और ऐसी बात जो उसे बुरी लगे उसे अगर वर्णन कर रहे हैं अभाव में यह ग़ीबत है और अगर इसमें वह बात है ही नहीं जो वर्णन की जा रही है तो यह आरोप है।

(मुस्लिम किताबुल बिर्रे वस्सिला हदीस नम्बर 6593)

इसलिए मुत्तकी का यह काम नहीं है कि ऐसी बातें करे जिससे समस्याएं पैदा होती हैं, समाज में हिंसा पैदा होती हों। न चुग़ली करना है न किसी पर आरोप लगाना है।

अत: रमज़ान में जब हम चाहते हैं कि अल्लाह तआला का तक्वा धारण करें उस की नज़दीकी हमें मिले अपनी नमाज़ों को हम स्वीकार होता हुआ देखें तो इन बुराइयों से बचने और अल्लाह तआला के आदेश का पालन करने के लिए हमें बहुत अधिक कोशिश करनी चाहिए। अल्लाह तआला हमें इसकी ताकत प्रदान करे कि हम सभी आदेशों का पालन करते हुए उसके नज़दीकी पाने वाले हों और रमज़ान के बाद भी हम में यह नेकियाँ स्थिर रहें। हम अल्लाह तआला के वास्तविक आबिद बनें और हम इसी की पूर्ण आज्ञापालन करने वाले हों।

नमाज़ के बाद एक नमाज़ जनाज़ा ग़ायब पढ़ाऊंगा जो एक शहीद की नमाज़ जनाज़ा है। आदरणीय चौधरी ख़लीक अहमद साहिब पुत्र चौधरी बशीर अहमद साहिब क्षेत्र गुलज़ार हिजरी ज़िला कराची। आप को 49 साल की उम्र में अहमदियत के विरोधियों ने 20 जून 2016 ई को रात क़रीब साढ़े नौ बजे उनके क्लिनिक में घुसकर फायरिंग कर के शहीद कर दिया। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजेऊन। विस्तार के अनुसार चौधरी ख़लीक अहमद साहिब ने मेडिकल डिप्लोमा किया हुआ था और अपने घर के पास ही होम्योपैथिक और ऐलोपेथिक क्लिनिक बना रखा था। घटना के दिन सामान्य के अनुसार रोज़ा खोलने के बाद अपने क्लिनिक स्थित गुलज़ार हिजरी पर वापिस आए और वहां मौजूद मरीज़ों को देख रहे थे। लगभग रात साढ़े नौ बजे हेलमेट पहने दो अज्ञात लोगों ने क्लिनिक में आकर आप पर फायरिंग कर दी और मौके से फरार हो गए। फायरिंग के नतीजे में दो गोलियां आप के सिर में लगी और दो गोलियां सीने में लगी। क्लिनिक के पास स्थित मेडिकल स्टोर वाले ने तुरंत बाइक पर आकर आप के घर जाकर सूचना दी। आपका बेटा गाड़ी लेकर आया और कार में डालकर तुरंत निकट के अस्पताल ले जाया गया लेकिन आप अस्पताल पहुंचने से पहले ही शहादत का जाम पी चुके थे। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजेऊन। कराची के इसी क्षेत्र गुलज़ार हिजरी में पिछले माह मई की 25 तारीख को अज्ञात लोगों ने फायरिंग करके आदरणीय दाऊद अहमद साहिब पुत्र हाजी ग़ुलाम मोहिउद्दीन साहिब को भी शहीद किया था।

शहीद स्वर्गीय के परिवार में अहमदियत का आरम्भ आप के दादा आदरणीय अल्लाह बख्श साहिब ऑफ अमृतसर द्वारा हुआ। उनका परिवार अमृतसर से गोखोवाल फिर रहीम यार ख़ान में बसा फिर शहदाद पुर ज़िला सांघर में चला गया। मरहूम शहदाद पुर ज़िला सांघर के करीब गांव अहमद पुर में 1967 ई में पैदा हुए थे। एफ. ए तक शिक्षा प्राप्त की फिर 1988 ई में कराची शिफ्ट हो गए। यहां मेडिकल डिप्लोमा किया एक निजी प्रयोगशाला में रेडियो ग्राफिक तकनीशियन के रूप में काम शुरू किया। साथ ही शाम के समय अपने क्लिनिक में मेडिकल प्रैक्टिस भी शुरू की। बाद में प्रयोगशाला की नौकरी छोड़कर पूरी तरह से मेडिकल क्लिनिक में बैठना शुरू कर दिया। शहीद मरहूम अनगिनत गुणों के मालिक थे। तब्लीग़ का उन्हें बड़ा शौक था। क्लिनिक पर भी जमाअत के बाहर के लोगों को प्रचार करते रहते थे। शहीद मरहूम नमाज़ जमाअत के पाबन्द थे। अत्यंत सहानुभूति वाले इंसान थे। नफल पढ़ने वाले थे इबादत में बड़े बढ़े हुए थे। असहायों को बिना पैसे के उपचार भी करने वाले थे। कुछ जमाअत के बाहर के रोगी लोग रोगी कहते थे कि आप कादियानी हैं आप से दवा लेने को मन तो नहीं करता लेकिन किया करें बच्चों को शिफा भी आप की दवाई से आती है। आप अल्लाह तआला की कृपा से मूसी भी थे। जमाअत की सेवाओं में भी आगे रहते थे। शहीद मरहूम को अपने क्षेत्र में महसिल और ज़ईम अंसारुल्लाह के रूप में तौफ़ीक़ मिली तथा पिछले 18 साल से सैक्रेटरी वक्फ नौ क्षेत्र के पद पर सेवा कर रहे थे। उनकी पत्नी कहती हैं और बच्चों ने भी लिखा है कि बड़ी कम उम्र में नमाज़ का पाबन्द किया। ख़ुद भी पांचों नमाज़ें नियमित अलग अलग निर्धारित समय पर अदा करते थे। कुरआन दैनिक अनुवाद सहित तिलावत आप की आदत था। समय के ख़लीफा का ख़ुत्बा ख़ुद भी नियमित सुनते और हमेशा बच्चों को भी सुनाते बल्कि सुबह शाम एम.टी.ए ज़रूर लगाते। और अगर घरों में प्रशिक्षण देना है तो एम.टी.ए ही अच्छा माध्यम है। मोहल्ले वालों के काम आने वाले थे।

स्वर्गीय शहीद की पत्नी कहती हैं कि मैंने एक महीने पहले सपने में देखा कि दो गिलास शरबत के भरे हुए हैं। मैं कहती हूं किस चीज़ का जूस है यह तो कोई विशेष जूस लगता है। तो मुझे सपने में बताया जाता है कि दुनिया की जो सबसे अच्छी चीज़ है इसका जूस है। शहीद मरहूम की शहादत के बाद सपने की समझ आई कि यह शहादत का जाम है। इससे पहले दाऊद अहमद साहिब शहीद हुए थे वह भी उन्हीं की गली में साथ ही थे। कुछ दिन पहले शहीद हुए। यह दो गिलास से शायद यह दो शहादतें अभिप्राय थीं।

इन के पीछे रहने वालों में भाई बहनों के अतिरिक्त उनकी पत्नी सुश्री बुशरा ख़लीक साहिबा हैं। दो बेटे हैं अनीक अहमद जो जामिया अहमदिया रबवा में छात्र हैं। इसी तरह एक बेटे रहीक अहमद इस पी. टी. एस के तीसरे वर्ष के छात्र हैं। एक बेटी शुमाइला अहमद है यह सोलह साल की है। अल्लाह तआला मरहूम के स्तर ऊंचा करे और इन के बच्चों और परिवार को धैर्य और साहस प्रदान करे और उनके पिता की नेकियाँ हमेशा इन बच्चों में भी जारी रहें।

☆ ☆ ☆

ख़ुत्बः जुमअः

रमज़ान के अन्तिम जुम्अः के बारे में ग़ैर अहमदी मुसलमानों में प्रचलित कुछ भूल धारणाओं का वर्णन तथा रद्द।

हम पर अल्लाह तआला का बहुत बड़ा एहसान है कि हमें इस ज़माने में अल्लाह तआला के भेजे हुए और उसके फरस्तादे और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे ग़ुलाम को स्वीकार करने की अल्लाह तआला ने तौफ़ीक़ प्रदान फरमाई। जिन्होंने हमें इन ग़लत धारणाओं और ग़लत विचारों से शुद्ध कर के वास्तविक मार्गदर्शन फरमाया और इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से आगाह किया है और अल्लाह तआला के सानिध्य के रास्ते दिखाए हैं।

अगर जुमअः अलविदा की कोई कल्पना है तो एक वास्तविक अहमदी के लिए यही धारणा होनी चाहिए कि हम बड़े भारी दिल के साथ इस जुमअः को विदा कर रहे हैं और इस सोच और दुआ के साथ कर रहे हैं कि वास्तव में जुमअः को नहीं बल्कि इस मुबारक महीने को, इन बरकतों वाले दिनों को हम विदा कर रहे हैं और जुमअः क्योंकि हमारे बड़ी संख्या में एकत्र होने का माध्यम बना है और यह इस रमज़ान का अंतिम जुमअः है इसलिए हम सब इकट्ठे होकर अल्लाह तआला से दुआ करते हैं कि अल्लाह तआला फिर हमें शक्ति दे कि जो दिन और जुमअः हम ने रमज़ान में बिताए हैं और जो बरकतें हम ने रमज़ान में हासिल की हैं उन पर कायम रहते हुए अपनी सारी क्षमताओं और शक्तियों के साथ अगले रमज़ान का स्वागत करें।

हम जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मानने वाले हैं हमारे लिए तो किसी भी दृष्टि से भी उचित नहीं कि अपने जुम्ओं के अदा करने को केवल रमज़ान तक या जुमअः अलविदा तक सीमित कर दें।

पवित्र कुरआन और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हदीस के हवाले से पवित्र जुम्अः का महत्तव और इस की फज़ीलतों का वर्णन और ख़ुत्बा जुम्अः को सीधा सुनने और इस से लाभान्वित होने के लिए विशेष हिदायत।

जुम्अः के दिन की सरकारी अवकाश की प्राप्ति के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की कोशिशों का वर्णन।

हम जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मानने का दावा करने वाले हैं। हमारे हर कर्म और कथन से इस्लाम की शिक्षा प्रकट होनी चाहिए। हमें यह प्रतिज्ञा करनी चाहिए कि यह रमज़ान जिन बरकतों को लेकर आया था और जो बरकतें छोड़कर जा रहा है उसे हम ने अपने जीवन का हिस्सा बनाना है। इंशा अल्लाह तआला। हम ने इस्लाम की व्यावहारिक छवि केवल एक महीने के लिए नहीं बनना बल्कि ज़माने के इमाम के किए हुए वादे को स्थायी पूरा करना है।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 1 जूलाई 2016 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَ رَسُوْلُهُ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ۔

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا نُوْدِيَ لِلصَّلٰوةِ مِنْ يَّوْمِ الْجُمُعَةِ فَاسْعَوْا اِلٰى ذِكْرِ اللّٰهِ وَ ذَرُوا الْبَيْعَ ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿۱۰﴾ فَاِذَا قُضِيَتِ الصَّلٰوةُ فَانْتَشِرُوْا فِي الْاَرْضِ وَ ابْتَغُوْا مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ وَ اذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿۱۱﴾ وَ اِذَا رَاَوْا تِجَارَةً اَوْ لَهْوَا انْفَضُّوْۤا اِلَيْهَا وَ تَرَكُوْكَ قَآئِمًا ؕ قُلْ مَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ مِّنَ اللَّهْوِ وَ مِنَ التِّجَارَةِ ؕ وَ اللّٰهُ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ﴿۱۲﴾

(सूरह जुम्अ:10 से12)

अल्लाह तआला ने रमज़ान के रोज़ों के अनिवार्य होने का जब आदेश दिया तो साथ ही यह भी फरमाया कि اَيَّامًا مَّعْدُوْدَاتٍ (अलबकर: 185) गिनती के कुछ दिन हैं। जब रमज़ान शुरू हुआ तो हम में से बहुत से सोचते होंगे कि गर्मियों के लंबे दिन हैं और उन में तीस रोज़े पता नहीं कैसे गुज़रेंगे, बड़ी मुश्किल होगी लेकिन जैसा कि अल्लाह तआला ने फरमाया कि गिनती के कुछ दिन हैं, यह दिन भी गुज़र गए। आज पच्चीसवां रोज़ा है और मुझे कई लोग लिखते भी हैं कि यह दिन बीत भी गए और पता भी नहीं चला। वास्तव में यह बात सही है। जब रमज़ान आता है, शुरू होता है, शुरू में लगता है बड़े लंबे दिन हैं लेकिन जब दिन बीतने शुरू होते हैं कोई अनुभव नहीं होता। आज रमज़ान का अंतिम जुमअ: है या कुछ स्थानों पर शायद चार रोज़े रह गए हों इन चार पांच दिनों में भी हम में से हर एक को कोशिश करनी चाहिए कि अगर कोई कमियां रमज़ान या रमज़ान में पूरा लाभ उठाने में रह गई हैं उन्हें हम इन दिनों में दूर करने की कोशिश करें। अल्लाह तआला से दुआ करें कि अल्लाह तआला हमारी पर्दा पोशी करे हम पर दया करे और हमें रमज़ान की बरकतों से वंचित न करे।

आज जैसा कि मैंने कहा कि रमज़ान का अंतिम जुमअ: है जिसे साधारणत: जुमअ: अलविदा कहते हैं। साधारण मुसलमानों में तो जुमअ: को रमज़ान का अंतिम जुमअ: समझते हुए और यह कल्पना रखते हुए कि जो इस जुमअ: में शामिल हो उस की सारी दुआएं स्वीकार हो जाती हैं और इस जुमअ: के अदा करने से सारे साल की छूटी हुई नमाज़ें और जुम्ओं और हर प्रकार की इबादतों का हक भी अदा हो जाता है लेकिन एक वास्तविक मोमिन की यह कल्पना नहीं। यह एक बेहद ग़लत अवधारणा है एक अहमदी और वास्तविक मोमिन के निकट तो ऐसी बातें और ऐसे विचार धर्म के साथ मज़ाक करने वाली बातें हैं।

हम पर अल्लाह तआला का बहुत बड़ा एहसान है कि हमें इस ज़माने में अल्लाह तआला के भेजे हुए और उसके फरिस्तादे और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे ग़ुलाम को स्वीकार करने की अल्लाह तआला ने तौफ़ीक़ प्रदान फरमाई। जिन्होंने हमें इन ग़लत धारणाओं और ग़लत विचारों से शुद्ध कर के वास्तविक मार्गदर्शन फरमाया और इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से

आगाह किया है और अल्लाह तआला के सानिध्य के रास्ते दिखाए हैं।

एक बार एक मजलिस में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से सवाल हुआ कि मुसलमानों में यह रिवाज है कि जुमअ: अलविदा के दिन लोग चार रकअत नमाज़ पढ़ते हैं और उसका नाम क़जाए उमरी रखते हैं और उद्देश्य यह होता है कि पिछली नमाज़ें जो अदा नहीं कीं उनकी भरपाई हो। इसका कोई सबूत है या नहीं? इसकी वास्तविकता क्या है? क्या यह उचित है?

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने यह सुनकर फ़रमाया कि एक व्यर्थ बात है। आपने फरमाया कि जो व्यक्ति जान बूझकर साल भर इसलिए नमाज़ छोड़ देता है कि क़जाए उमरी वाले दिन अदा कर लूंगा तो वह गुनाहगार है और जो व्यक्ति लज्जित होकर तौबा करता है और इस इरादे से पढ़ता है कि भविष्य में नमाज़ त्याग न करूंगा तो इसके लिए हर्ज नहीं। फरमाया हम तो इस मामले में हज़रत अली का ही जवाब देते हैं। हज़रत अली रज़ियल्लाहो अन्हो के उत्तर की घटना इस प्रकार है जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उल्लेख की कि एक बार एक व्यक्ति असमय नमाज़ पढ़ रहा था। नमाज़ का समय नहीं था नमाज़ पढ़ रहा था। किसी व्यक्ति ने हज़रत अली रज़ियल्लाहो अन्हो को फरमाया कि आप समय के ख़लीफा हैं उसे मना क्यों नहीं करते कि ग़लत समय पर नमाज़ पढ़ रहा है।? उन्होंने फरमाया कि मुझे डर है कि कहीं इस आयत के नीचे आरोपी न बन जाऊं।

اَرَءَيْتَ الَّذِىْ يَنْهٰى ۙ﴿۱۰﴾ عَبْدًا اِذَا صَلّٰى

(सूरह अलक10.11) अर्थात क्या तुम ने विचार किया जो रोकता है एक बन्दे को जब वह नमाज़ पढ़ता है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस उद्धरण के बाद फरमाते हैं कि अगर अफसोस के रूप में सुधार के रूप में करता है तो पढ़ने दो क्यों मना करते हो आख़िर दुआ ही करता है।(यह जो चार रकअतें पढ़ रहा है।) हाँ, उसमें कम हिम्मती अवश्य है। इरादों का हाल तो अल्लाह तआला जानता है जिस के कारण से हज़रत अली रज़ियल्लाहो अन्हो ने भी सावधानी बरती और इस बात को सामने रखते हुए कि अल्लाह तआला ने कुरआन शरीफ में फरमाया है कि اَرَءَيْتَ الَّذِىْ يَنْهٰى ۙ﴿۱۰﴾ عَبْدًا اِذَا صَلّٰى इस बात को सामने रखते हुए इसे नहीं रोका। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम भी इसी बात को सामने रखते हुए यह फतवा दिया है लेकिन साथ ही यह स्पष्ट कह दिया कि यह कम हिम्मती है और अगर नीयत कज़ाए उमरी की है और सुधार नहीं है। यदि इस इरादे से पढ़ी कि आज चार रकअतें पढ़ रहा हूँ और आज के बाद मेरे मन में भविष्य में नियमित नमाज़ें पढ़ता रहूंगा तो ठीक है। अगर सुधार की नीयत नहीं है तो फिर ऐसा व्यक्ति गुनाहगार है।

(उद्धरित मल्फूज़ात भाग 5 पृष्ठ 366)

इसलिए जमाअत अहमदिया में तो कज़ाए उम्ररी की कोई कल्पना नहीं। हम ने तो ज़माना के इमाम को माना है और इस शर्त के साथ माना है कि बिदअतों से परहेज़ करेंगे धर्म को दुनिया में प्राथमिकता देंगे और जब धर्म को प्राथमिकता करने का वाद है तो फिर नमाज़ें छोड़ना कैसा और जुमअ: छोड़ना कैसा। हमारे लिए तो अगर कोई जुमअ: अलविदा की कल्पना है तो पूरी तरह से और अवधारणा है और एक वास्तविक अहमदी के लिए यही धारणा होनी चाहिए और वह यह है कि हम बड़े भारी दिल के साथ इस जुमअ: को विदा कर रहे हैं और इस सोच और दुआ के साथ कर रहे हैं कि वास्तव में जुमअ: को नहीं बल्कि इस मुबारक महीने, इन बरकतों वाले दिनों को हम विदा कर रहे हैं और जुमअ: क्योंकि हमारे बड़ी संख्या में एकत्र होने का माध्यम बना है और यह रमज़ान का अंतिम जुमअ: है इसलिए हम सब इकट्ठे होकर अल्लाह तआला से दुआ करते हैं कि अल्लाह तआला फिर हमें शक्ति दे कि जो दिन और जुमए हम ने रमज़ान में बिताए हैं और जो बरकतें हम ने रमज़ान में हासिल की हैं उन पर कायम रहते हुए अपनी सारी क्षमताओं और शक्तियों के साथ अगले रमज़ान का स्वागत करें। तो यह हमारी सोच होनी चाहिए।

किसी प्रिय को विदा इसलिए नहीं किया जाता कि जाओ अब तुम हमारे से विदा हो रहे हो इस लिए अब हम तुम्हें भूलने लगे हैं और अब तुम्हारी याद से हमें कोई सरोकार नहीं। अपने प्यारे जो स्थायी छोड़ कर जाते हैं, मनुष्य तो उनकी यादों को नहीं भुलाता। उनकी यादों को जारी रखने के लिए उनके नेक काम जारी रखने की कोशिश करता है या उनके नाम पर नेकियों को जारी करता है। मोमिन हैं तो उनके लिए दुआ भी करते हैं और जो अस्थायी विदा होते हैं, अपनी व्यवस्ताओं और कार्यों के कारण से एक शहर से दूसरे शहर या एक देश से दूसरे देश जा रहे हैं उन्हें तो इंसान बिल्कुल भी नहीं भुलाता और आजकल सुविधाओं का उपयोग करते हुए हम देखते हैं फोन या लिखित मैसेज हैं या विभिन्न तरीके हैं बल्कि अब तो स्काइप भी एक शुरू हो चुका है, उसके द्वारा कोशिश होती है कि अपने प्यारों की आवाज़ भी सुनें और उनकी गतिविधियों और हरकतो को भी देख सकें। इसलिए किसी प्रिय को विदा कभी हम इसलिए नहीं करते कि अब साल दो साल के लिए तुम्हारी याद हमारे दिलों से निकल जाएगी। हम तुम्हें भूल जाएंगे कि तुम कौन हो और कौन थे। अब जब तुम दोबारा मिलोगे तो देखेंगे कि तुम्हारे हक़ अदा करने हैं या नहीं ? तुम्हारे से वही प्यार का व्यवहार रखना है या नहीं ? क्या कभी सांसारिक संबंध में ऐसा होते किसी ने देखा है ? अगर कोई कभी ऐसा करता होगा तो उसे सब लोग पागल कहेंगे मगर जब इस हस्ती का सवाल आता है जो सब से प्यारी है जो सारे संसारों की रब्ब है जो हमारी परवरिश करने वाली है जो हमें सब कुछ देने वाली है जो रहमान है, रहीम है, जो यह कहता है कि मुझ से ईमान और निकटता का सम्बन्ध न तोड़ो जो यह कहता है कि मेरी बातें मानो कि सब लोगों से बढ़कर मैं तुम से प्रेम करने वाला हूँ और प्यार किए जाने का हक रखने वाला हूँ। जो कहता है कि मेरी यादों को ताज़ा रखो इसे हम कहें कि हे अल्लाह तआला ! तेरी बड़ी मेहरबानी कि तूने अपनी यादों और अपनी इबादतों और रोज़ों के गिनती के दिनों से हमें गुज़ारा। अब हमारी छुट्टी हो गई। मामला समाप्त हो गया। कौन सा रब्ब और कौन सा अल्लाह। अब हम इस जुमअ: से तुझे अलविदा कहते हैं और इस विदाई के साथ अब हम पूरी तरह से एक साल के लिए तुझे भूलने वाले हैं। अब एक साल बाद अगला रमज़ान आएगा तो इबादतों और नेक कामों के द्वारा तुझे याद करने की कोशिश करेंगे और बशर्ते जीवन और स्वास्थ्य तेरा जो भी हो सका टूटा फूटा हक़ अदा करने की कोशिश करेंगे। अगर पूरे रमज़ान के महीने में कोई इबादत और अच्छाई न कर सके तो रमज़ान के अंत में जुमअ: अलविदा तो आना ही है इसमें जमा होकर तेरा हक़ अदा कर देंगे, तेरी रबूबियत और तेरे उपकारों का बदला उतार देंगे। अगर यह व्यक्ति इस तरह सोच रखता हो या व्यक्त करे तो उसे भी लोग ज़रूर पाग़ल कहेंगे लेकिन यह सोच लोग रखते हैं। भाषा से व्यक्त नहीं करते लेकिन व्यावहारिक व्यक्त हो जाता है। जुमओं की हाज़री और अगले जुम्अ: की हाज़री देखने से पता लग जाता है। अगर यह बात है तो उसे अज्ञान और धर्म का थोड़ा सा भी इल्म न रखना और अल्लाह तआला में कम विश्वास न होना कहेंगे।

तो एक मोमिन की सोच नहीं हो सकती। मोमिन तो इन बातों से बहुत ऊपर है। मोमिन तो अल्लाह तआला की बताई हुई नेकियों को जारी रखता है। वह तो अल्लाह तआला की धन्यवाद की भावनाओं से भरा होता है। वह तो रमज़ान में से गुज़रता है तो अल्लाह तआला की ख़ुशी पाने के लिए। वह जब अल्लाह तआला के आदेश पर चलते हुए रमज़ान को अलविदा कहता है तो बड़े भारी मन के साथ कि अब हम रमज़ान से विदा तो हो रहे हैं लेकिन इन दिनों की याद हमेशा दिलों में ताज़ा रखेंगे। रमज़ान में जो प्यारी प्यारी और नेक बातें सीखी हैं उनकी जुगाली करते रहेंगे। रमज़ान में जो इबादतों की ध्यान पैदा हुआ है उसे हमेशा जीवित रखेंगे और कभी हमारे कदम तेरे नज़दीकी को पाने के लिए रुकेंगे नहीं। हम ने तो तेरे प्यार के अजीब नज़ारे देखे। जब हम चल कर तेरे पास जाने की कोशिश करते हैं तो तू अपने वादे के अनुसार दौड़ कर हमारे पास आता है। तो यह कैसे हो सकता है कि हम अपने सांसारिक रिश्तों की यादें तो ताज़ा रखें और जो सबसे अधिक प्यार करने वाला है उसकी याद को भुला दें और उसके परोपकार को भुला दें। अल्लाह तआला तो एहसान करने के तरीके भी अजीब हैं। यह कितना बड़ा एहसान है कि उसने विदा के बाद यादों को ताज़ा रखने के लिए उन्हें भुलाने से बचाने के लिए प्यारी प्यारी यादें जुगाली करने के लिए सात दिन बाद वह समारोह आयोजित करने के सामान कर दिए जिस में से हम जुमअ: अलविदा वाले दिन गुज़रे थे या गुज़र रहे हैं। एक साल रमज़ान के इंतज़ार के लिए तो वास्तव में ठीक है लेकिन अपने प्यार की अभिव्यक्ति और अपने पुरस्कार के सम्मानित करने से वंचित नहीं किया। हर सातवें दिन जुमअ: रखकर इन्हीं बरकतों को लेने वाला हमें बना दिया जो जुमअ: अलविदा के दिन मिलनी थीं या मिलती हैं। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जुमअ: में एक ऐसी घड़ी आती है कि एक मुसलमान जब खड़ा नमाज़ पढ़ रहा हो तो जो दुआ मांगे स्वीकार हो जाती है लेकिन यह घड़ी बहुत ही कम

है।(सहीह बुख़ारी किताबुल जुम्अ: हदीस 935) यह समय, यह क्षण, साधारण जुम्ओं में भी उतना ही है जितना रमज़ान के अंतिम जुमअ: में है।

इसलिए आज के बाद हम अल्लाह तआला की उन नज़दीकी की घड़ियों से अलग नहीं हो रहे बल्कि यह समय हमें सात दिन बाद फिर मिलने वाला है। अगर कोई इन नेकियों और इन घड़ियों को विदा कर रहा है तो वह मोमिन नहीं है। एक मोमिन तो कभी नेकियों को विदा नहीं करता। एक मोमिन तो अल्लाह तआला से कभी दूर नहीं जाता बल्कि वह तो इस कोशिश में होता है कि कैसे भलाई को याद रखने के सामान करूं। कैसे अल्लाह तआला के नज़दीकी पाने के तरीके तलाश करूं और अल्लाह तआला से नज़दीकी पाने के रास्ते भी सीमित नहीं। प्रत्येक नेकी अल्लाह तआला तक पहुंचाने वाली है इसलिए वह हर रास्ते को खोजने की कोशिश करता है केवल जुमअ: पर ही निर्भर नहीं है कि जुमअ: आएगा तो अल्लाह तआला से मिलने के सामान होंगे बल्कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमें अल्लाह तआला से शीघ्र से शीघ्र मिलने और ख़ुशी पाने के तरीके समझाते हुए बताया कि पांच नमाज़ें, जुमअ: अगले जुमअ: तक और रमज़ान अगले रमज़ान तक उनके बीच होने वाले गुनाहों का प्रायश्चित हो जाता है शर्त यह है कि मनुष्य बड़े बड़े गुनाहों से बचता रहा।(सहीह मुस्लिम किताबुत्तहारत हदीस 440)

अत: अल्लाह तआला के नज़दीकी के लिए दैनिक पांच बार सम्पर्क का सामान कर दिया। इन नमाज़ों के द्वारा ख़ुदा तआला से संपर्क रखो। अल्लाह तआला की माफी से हिस्सा पाते रहोगे। इसकी दया को प्राप्त करते रहोगे बशर्ते जान बूझकर बेशर्मी दिखाते हुए बड़े गुनाहों में शामिल न हो। हर जुमअ: में शामिल हो और इस घड़ी से लाभ उठाओ जो दुआ की स्वीकृति की घड़ी है तो तुम बुराइयों से बचने और नेकियों पर तरक्की करने वाले बन जाओगे। रमज़ान में पैदा किए गए परिवर्तनों को पूरे साल जारी रखो और गुनाहों में शामिल न हो तो केवल रमज़ान का ही महीना नहीं बल्कि आप सारा वर्ष अल्लाह तआला की दया और माफी के हकदार बन जाओगे और आग से बचाव पाओगे। इसलिए आज हर एक यह प्रतिज्ञा करे कि यह जुमअ:, यह रमज़ान हमें अपनी नमाज़ों की सुरक्षा की तरफ ध्यान देने वाला बनेगा हमारे जुमओं की अदायगी का ध्यान दिलाने वाला बनेगा और जो नेकियाँ हम ने रमज़ान में की हैं और सीखी हैं उन्हें अगले रमज़ान तक पहुंचाने की हम पूरी कोशिश करेंगे।

इसलिए इबादतों और नेकियों की तरफ जो हमारा ध्यान रमज़ान में पैदा हुआ है इस पर स्थायी होने की हम ने प्रतिज्ञा करनी है ताकि अगले रमज़ान की तैयारी और स्वागत के लिए हमारी लगातार रिहर्सल और प्रशिक्षण होती रहे ताकि जब हम अगले रमज़ान में प्रवेश कर रहे हों तो एक मंजिल तय कर चुके हैं और यहां से फिर अगले रमज़ान में सफल निकलने के लिए नए लक्ष्य और नए उद्देश्य निर्धारित करें ताकि नेकियों में बढ़ते चले गए हैं और ख़ुदा तआला के अधिक करीब हों उसकी हस्ती का अधिक एहसास प्राप्त करने वाले हों। फिर हम में से तो अब कई हैं जिन्होंने अल्लाह तआला के नज़दीकी की कई मंजिलें तय करनी हैं। हम नहीं कह सकते कि हम ने सारी मंज़िलें तय कर ली हैं। अगर इन स्थलों को तय करने के लिए हम केवल रमज़ान का ही इंतजार करते रहे तो फिर तो उम्र गुज़र जाऐगी और हमारे लक्ष्य हमारे उद्देश्य शायद फिर प्राप्त न हों। उम्रें बीतने के बावजूद भी प्राप्त न हो सकें बल्कि एक साल का अव्यावहारिक समय हमें फिर वहीं वापस लाएगा जहां हम पहले दिन खड़े थे।

इस रमज़ान में मैंने जो ख़ुत्बे दिए हैं उनमें तक्वा दुआ और अल्लाह तआला के आदेश का पालन जिनमें सबसे महत्त्वपूर्ण इबादत का आदेश है कि हमारे जीवन का उद्देश्य है और इसलिए एक दूसरे के अधिकार को अदा करने के लिए ध्यान करना और उच्च नैतिकता के प्रदर्शन आदि के विषय शामिल थे। प्रत्येक ख़ुत्बा के बाद मुझे कई लोगों के पत्र आते थे कि हमें याद रहा और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उद्धरण के हवाले से हमें इन विषयों को बेहतर समझने की ताकत भी मिली। यह तो ठीक है तौफ़ीक़ मिली परन्तु इन बातों का लाभ तभी है जब हम उन बातों को अपने जीवन का हिस्सा बना लें।

जैसा कि मैंने हदीसों के हवाले से बताया कि हर जुमअ: महत्त्वपूर्ण है। जुमअ: का महत्त्व न रमज़ान के जुम्ओं के साथ जुड़ा हुआ है न ही जुमअ: अलविदा के साथ जुड़ा हुआ है बल्कि रमज़ान का महत्त्व इस में है कि जब स्थायी रूप से जुम्ओं को अदा करने की ओर हमारा ध्यान रहे और पांच नमाज़ों की ओर भी हमारा ध्यान रहे। यह रमज़ान तो हमें यह बताने आया है कि सामूहिक रंग में जो नमाज़ें नेकियों और जुम्ओं के अदा करने का शौक और जागरूकता तुम में पैदा हुई है इसे अब खत्म न होने देना और अगले रमज़ान तक उसकी रक्षा करना।

ये आयतें जो मैंने सुनाई हैं उनमें भी अल्लाह तआला ने जुमअ: के महत्त्व के बारे में बताया है। इसका अनुवाद इस प्रकार है कि

हे वे लोगो जो ईमान लाए हो जब जुमअ: के दिन के एक भाग में नमाज़ के लिए बुलाया जाए तो अल्लाह तआला के ज़िक्र की तरफ जल्दी करते हुए बढ़ा करो और व्यापार छोड़ दिया करो। यह तुम्हारे लिए अच्छा है अगर तुम ज्ञान रखते हो।

फिर अगली आयत है। अत: जब नमाज़ अदा की जा चुकी हो तो ज़मीन में बिखर जाओ और अल्लाह तआला की कृपा में से कुछ की तलाश करो और अल्लाह तआला को बहुतायत से याद करो ताकि तुम सफल हो जाओ।

फिर यह आख़री आयत है और यह सूर: जुमअ: की भी अंतिम आयत है। और जब वह कोई व्यापार या दिल बहलावा देखेंगे तो उसकी ओर दौड़ पड़ेंगे और तुझे अकेला खड़ा हुआ छोड़ देंगे। तू कह दे कि जो अल्लाह तआला के निकट है वह दिल बहलावे और व्यापार से बहुत अच्छा है और अल्लाह तआला रिज़्क प्रदान करने वालों में सबसे बेहतर है।

इसलिए यहां विशेष रूप से जुम्ओं में शामिल होने की ओर ध्यान दिलाया गया है। जुमअ: की अज़ान की आवाज़ सुनो या आजकल प्रत्येक को पता है, घड़ियां देखता है, समय निर्धारित होता है उन्हें देखो कि जुमअ: का समय है तो अपने सब काम और कारोबार बंद करो और जुमअ: के लिए आओ। और ख़ुत्बा जुमअ: भी इबादत का ही हिस्सा है। इसलिए सुस्ती न दिखाओ कि नमाज़ शुरू होने तक पहुंच जाएंगे और नमाज़ में शामिल हो जाऐंगे बल्कि ख़ुत्बा के लिए पहुंचने की कोशिश करनी चाहिए।

यहाँ आंशिक रूप से यह भी उल्लेख कर दूँ बल्कि बड़ा महत्त्वपूर्ण उल्लेख है कि इस ज़माने में अल्लाह तआला ने हमें एम.टी.ऐ की सुविधा उपलब्ध फरमाई हुई है। यूरोप और अफ्रीका के कुछ देशों में तो जुमअ: का समय भी एक ही है इसलिए जब एक समय है तो समय के ख़लीफा का ख़ुत्बा सुनना चाहिए। यह उपकार है अल्लाह तआला का हम पर कि इस सुविधा के द्वारा जमाअत की इकाई का एक और उपकरण मुहैया कर दिया। जहां समय का अंतर है वहां भी अहमदियों को सुनना चाहिए। अगर लाइव नहीं तो रिकॉर्डिंग सुनें और इस तरह इस ख़ुत्बा के विस्तृत अंश लेकर ख़ुत्बा देने वालों को या जहाँ मुबल्लिग़ों, मुरबियान ख़ुत्बा देते हैं उन्हें अपनी जमाअत में उसी दिन या अगले दिन या अगले दिन नहीं तो अगले सप्ताह यह ख़ुत्बा सुनाना चाहिए। पश्चिम की ओर हम अधिक जाएंगे तो वहां सुबह का समय है। वे सुबह सुन लेते हैं उसी दिन भी सुना सकते हैं। पूर्व में दिन बीत चुके हैं वहां शाम हो रही है या समय आगे चला गया है तो अगले सप्ताह सुना सकते हैं। यह एक जमाअत में इकाई बनाने का बहुत बड़ा स्रोत है बल्कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के युग को जो जुमअ: से विशेष तुलना है। अल्लाह तआला ने इस आविष्कार के द्वारा समय के ख़लीफा के ख़ुत्बा को भी इसका एक हिस्सा बना दिया है।

फिर दूसरी आयत में अल्लाह तआला ने स्पष्ट कर दिया कि अगर तुम्हारे काम हैं तो तुम जुमअ: से पहले या बाद में कर सकते हो और जुमअ: के समय विशेष रूप से यह काम न कर के जब जुमअ: को आओगे तो अपने सांसारिक कार्यों में भी अल्लाह तआला के फज़लों और बरकतों के वारिस बनोगे। अत: जुमअ: में इसलिए शामिल न होना कि हमारे सांसारिक काम प्रभावित होंगे यह न केवल ग़लत है बल्कि ख़ुद अपने लिए हानिकारक है। किसी भी काम को फल लगाना और बरकत डालना तो ख़ुदा तआला का काम है इसलिए याद रखो कि यदि अल्लाह तआला की बात नहीं मानोगे तो अल्लाह तआला फरमाता है काम में बरकत नहीं होगी और अगर बात मानोगे तो काम में बरकत होगी। फिर अल्लाह तआला फरमाता है कि तुम्हारे व्यापार सांसारिक व्यवसाय और खेल कूद तुम्हें जुमअ: पढ़ने से रोकने वाले न हों। विशेष रूप से यह बातें इस जमाना में हम देखते हैं और जैसा कि मैंने कहा कि इस समय को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के समय विशेष तुलना है इसलिए विशेष रूप से यह निर्देश है कि तुम्हारे व्यापार जो केवल स्थानीय

नहीं रहे, पहले तो स्थानीय स्तर पर व्यापार हुआ करते थे। वाणिज्यिक काफिले जाते थे लेकिन जो वे करते थे किसी एक शहर तक सीमित होते थे अब व्यापार स्थानीय नहीं रहे बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय होने के कारण तुम्हें अधिक व्यस्त रखते हैं। उसी तरह तुम्हारे खेल हैं और सांसारिक व्यस्तता जो अन्तर्राष्ट्रीय होने के कारण समय की सीमा का लिहाज़ नहीं रखतीं। इनमें तुम ने या एक मोमिन ने बहरहाल जुमअ: का ध्यान रखना है क्योंकि एक मोमिन की सबसे बड़ी प्राथमिकता अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्त करना है और यही एक मोमिन की प्राथमिकता होनी चाहिए।

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा तो आप की कुव्वते कुद्दसी के कारण पूरी तरह से पवित्र हो चुके थे और उन्हें अल्लाह तआला की प्रसन्नता सबसे प्रथम थी इसलिए उनके बारे में तो कल्पना भी नहीं की जा सकती कि वे कारोबार और खेल के कारण से जुमअ: छोड़ते होंगे और फिर स्थानीय स्तर पर व्यापारों और खेल के समय तो जुमअ: के समय के आधार पर समायोजित भी किया जा सकता था। यह निश्चित रूप से हमारे समय की स्थिति का ही नक्शा है। हज़रत मसीह मौऊद के ज़माने का ही नक्शा है जब धर्म की प्राथमिकता पीछे चली जाएगी और सांसारिक प्राथमिकताएं सामने आ जाएंगी। चौबीस घंटे ही व्यापारों और खेलकूद में व्यस्त होंगे। दुनिया की दूरी कम हो जाएगी। मीडिया के द्वारा घर बैठे ही दुनिया की जगह जगह की लग़्व और व्यर्थ और दिल बहलावे की बातें हर समय घर बैठे मिल रही होंगी। अल्लाह तआला फरमाता है कि ऐसे समय में तुम अगर अपनी प्राथमिकताएं सही रखोगे तो याद रखो कि अल्लाह तआला के फज़लों को पाने वाले बनोगे। बेशक अल्लाह तआला के निकट जो कुछ है वह व्यापारों और दिल बहलावे के सामानों से बहुत अधिक है और अल्लाह तआला सभी प्रकार का रिज़्क भी प्रदान करने वाला है। वही है जिसके द्वारा हर प्रकार के रिज़्क आता है और वही राज़्ज़ाक (रिज़क देना वाला) है। तो अगर तुम उसकी बात मानते हुए अपने जुम्ओं की रक्षा करोगे तो सांसारिक रिज़क में भी बरकत प्राप्त करने वाले बनोगे।

इसलिए हमें जुमअ: के इस महत्त्व को अपने सामने रखना चाहिए। हम जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मानने वाले हैं हमारे लिए तो किसी भी दृष्टि से भी उचित नहीं कि अपने जुम्ओं के अदा करने को केवल रमज़ान तक या जुमअ: अलविदा सीमित कर दें।

जुमअ: के महत्त्व को अधिक स्पष्ट करने के लिए कुछ और हदीसों प्रस्तुत करता हूँ।

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जुमअ: के महत्त्व और उसकी बरकत का उल्लेख करते हुए एक अवसर पर फरमाया कि जब जुमअ: का दिन होता है तो मस्जिद के हर दरवाज़े पर फरिशते होते हैं वे मस्जिद में पहले आने वाले को पहला लिखते हैं और इसी तरह वे आने वालों की सूची अनुक्रमिक तैयार करते रहते हैं यहां तक कि जब इमाम भाषण देकर बैठ जाता है तो वह अपना रजिस्टर बंद कर देते हैं।

(सहीह बुख़ारी किताब बदउल ख़लक हदीस 3211)

इसलिए जो अपने सांसारिक कार्यों के कारण अंतिम समय में आते हैं इस सूची में अंत में सम्मिलित होते हैं और अंत में सम्मिलित होने वालों के लिए इनाम भी बहुत थोड़ा है। कुछ जगह सवाब का उल्लेख भी मिलता है कि अंत में आने वाले को मुर्गी के अंडे जितना सवाब मिलता है और पहले आने वाले को ऊंट जितना सवाब मिलता है।

(सहीह बुख़ारी किताबुल जुम्अ: हदीस 881)

तो यह उदाहरण इस बात को बताने के लिए है कि तुम यह न समझो कि जब मस्जिद में आकर बैठ गए और कुछ इंतज़ार करना पड़ा तो यह समय की बर्बादी है। बल्कि यह ऐसे व्यक्ति को पुरस्कार का हकदार बना रहा है जो जल्दी आने वाला है और बाद में आने वालों से पहले आने वालों का अन्तर कर रहा है। पहले आने वाले मस्जिद में बैठ कर ज़िक्र कर रहे हैं यह वास्तव में अल्लाह तआला की नज़दीकी दिलाने वाली बात है।

इसके महत्त्व को एक अवसर पर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ऐस प्रकार वर्णन फरमाया कि क़यामत के दिन अल्लाह तआला के समक्ष जुम्ओं में आने की दृष्टि में बैठे होंगे अर्थात पहला दूसरा तीसरा फिर चौथा और रावी ने कहा यह भी कहा कि चौथा भी अल्लाह तआला के दरबार में बैठने की दृष्टि से कोई दूर नहीं है।

(सुनन इब्म माजा किताब इकामुस्सलात हदीस 1094)

फिर एक अवसर पर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जुमअ: की नमाज पढ़ने आया करो और इमाम के पास होकर बैठा करो और एक व्यक्ति जुमअ: में पीछे रहते रहते जन्नत से पीछे रह जाता है हालांकि वह जन्नतियों में होता है।

(मुस्नद अहमद बिन हंबल भाग 6 पृष्ठ 752 हदीस 20373 प्रकाशन आलम बैरूत 1998 ई)

तो यह सब हदीसें बताती हैं कि जुमअ: की नमाज़ का महत्त्व है भले ही वह जुमअ: रमज़ान में आ रहा है रमज़ान का अंतिम जुमअ: है या सामान्य परिस्थितियों में आने वाला जुमअ: है। जन्नत से पीछे रहने का अर्थ ही यह है कि इंसान अपनी सुस्ती और जुमअ: को महत्त्व न देने के कारण से भी अन्य गुणों के अपने आप को जन्नत से वंचित कर लेता है या अल्लाह तआला से अपने आप को दूर ले जाता है। जुमअ: का महत्त्व न होने के कारण से जुम्ओं में नाग़े करने लग जाता है। इस बारे में एक जगह आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस प्रकार डराया है फरमाया कि जिसने लगातार तीन जुमअ: जान बूझकर छोड़ दिए अल्लाह तआला उसके दिल पर मुहर कर देता है।

(मुस्नद अहमद बिन हंबल भाग 5 पृष्ठ 339 हदीस 15580 प्रकाशन आलम बैरूत 1998 ई)

इसलिए जो जुम्ओं में शामिल किए जाने को सरसरी लेते हैं उनके लिए बड़ा डर का विषय है। दिल पर मुहर कर देने का अर्थ ही यह है कि उन्हें फिर न नेकियों की ताकत मिलती है न वह अल्लाह तआला का प्यार पाने वाले बनते हैं। अत: प्रत्येक हदीस बड़ी स्पष्ट है कि प्रत्येक जुमअ: महत्त्वपूर्ण है और हमें अपनी पूरी कोशिश कर के जुमअ: में शामिल होना चाहिए लेकिन कुछ मजबूर हैं जो नहीं आ सकते। कुछ को ख़ुद अल्लाह तआला ने छूट दी हुई है। अल्लाह तआला ज़ालिम नहीं जो जुम्ओं में छूट हैं उनके संबंध में आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि ग़ुलाम, महिला और बच्चे और रोगी यह सब मजबूरी की श्रेणी में आते हैं।(सुनन अबू दाऊद किताबुस्सलात हदीस 1067) इन पर ज़रूरी नहीं कि यह जुमअ: पढ़ें। उनके लिए छूट है ज़रूरी नहीं जुमअ: पर आएं। यहाँ यह बात स्पष्ट हो गई जो कुछ औरतें पूछती हैं, मुझे ख़त भी लिखती हैं बल्कि शिकायत करती हैं कि हमें कई बार प्रशासन यह कहता है कि जुमअ: को बच्चों का शोर होता है इसलिए बच्चों वाली महिलाएं न आया करें। इन महिलाओं और बच्चों को तो ख़ुद आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने छूट दी है इसलिए बेहतर यही है कि जहां बच्चों को अलग बिठाने की व्यवस्था नहीं है वहां बच्चों वाली महिलाएं न आएं। वैसे भी महिलाओं पर अनिवार्य नहीं है लेकिन पुरुषों पर बहरहाल वाजिब है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से भी एक बार महिलाओं के जुमअ: पढ़ने के बारे में मामला पूछा गया तो आप ने फरमाया कि जो बात सुन्नत और हदीस में है इससे अधिक हम इस का विवरण क्या कर सकते हैं। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने महिलाओं को जब छूट दे दी तो यह आदेश केवल पुरुषों के लिए ही रहा। (अर्थात जुमअ: का।)

(अल्बदर 11 सितम्बर 1903 ई पृष्ठ 366 जिल्द 2 नम्बर 34)

इसलिए पुरुषों पर तो बहरहाल वाजिब है कि अगर वे रोगी नहीं और कोई वैध मजबूरी नहीं तो बहरहाल जुमअ: को आना है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जुमअ: के महत्त्व के बारे में बताया और इसी महत्त्व के मद्देनजर आप ने अपने समय में 1895-96 ई में सरकार में एक आंदोलन करना चाहा कि भारत में जुमअ: के अदा करने के लिए दो घंटे की सरकारी दफ्तरों में छूट हुआ करे और मुसलमानों से हस्ताक्षर लेने शुरू कर दिए लेकिन तब मौलवी मोहम्मद हुसैन साहिब ने एक विज्ञापन दिया कि यह काम तो अच्छा है लेकिन मिर्ज़ा साहिब के हाथ से यह काम नहीं होना चाहिए हम ख़ुद उसे अंजाम देंगे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फरमाया कि हमें तो कोई नाम और प्रसिद्धि का शौक नहीं है आप ख़ुद कर लें। और आप ने कार्रवाई बंद कर दी तो लेकिन फिर न मौलवी मोहम्मद हुसैन साहिब को न किसी अन्य मुस्लिम विद्वान को उस पर कार्रवाई की

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN XXX
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
PUNHIND 01885 Vol. 1 Thursday 4 Aug 2016 Issue No. 22

MANAGER : NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com
ANNUAL SUBSCRIPTION : Rs. 300/-

तौफीक़ मिली और वह कार्रवाई आगे नहीं चली

(उद्धरित ज़िक्रे हबीब हज़रत मुफ्ती मुहम्मद सादिक जुम्अ: नमाज़ की छुट्टी पृष्ठ 42-43)

लेकिन बहरहाल एक अवसर पर वायसराय भारत लॉर्ड कर्ज़न को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक मेमोरियल भेजा जिस में उनके गुणों का उल्लेख करके और मुसलमानों के अधिकारों के अदा करने का धन्यवाद करके जो इस बात का धन्यवाद था कि लाहौर की शाही मस्जिद को उन्होंने मुसलमानों को वापस दिलवाई, वह मस्जिद के रूप में इस्तेमाल हो रही है और इसी तरह एक और मस्जिद जिस पर रेलवे वालों का कब्ज़ा था उसे छुड़वा कर मुसलमानों को दिया और बड़ा एहसान किया है। आप ने इस मेमोरियल में लिखा "लेकिन एक इच्छा उनकी (अर्थात मुसलमानों की) अब तक बाकी है और वह उम्मीद हैं कि जिन हाथों से यह मुरादें पूरी हुई हैं (अर्थात वे मस्जिदें वापस मिली हैं।) वह तमन्ना भी इन्हीं हाथों से पूरी होगी और वह तमन्ना यह है कि जुमअ: का दिन एक इस्लामी भव्य त्योहार है और कुरआन शरीफ ने विशेष रूप से उस दिन छुट्टी का दिन ठहराया है और इस बारे में विशेष एक सूरह कुरआन शरीफ में मौजूद है जिसका नाम सूरह अल्जुम्अ: है और इस में आदेश है कि जब जुमअ: की आज़ान दी जाए तो तुम दुनिया का हर काम बंद कर दो और मस्जिदों में जमा हो जाओ और जुमअ: की नमाज़ इस की सभी शर्तों के साथ अदा करो और जो व्यक्ति ऐसा नहीं करेगा वह सख्त गुनहगार है और क़रीब है कि इस्लाम से ख़ारिज हो और जितना जुमअ: की नमाज़ और ख़ुत्बा सुनने की कुरआन शरीफ में ताकीद है इतना ईद की नमाज़ की भी ताकीद नहीं। इसी लिए प्राचीन से और जब से कि इस्लाम प्रकट हुआ जुमअ: की छुट्टी मुसलमानों में चली आई है और इस देश में भी बराबर आठ सौ वर्ष तक अर्थात जब तक इस देश में इस्लाम का साम्राज्य रहा, जुमअ: की छुट्टी होती थी।" फिर आपने मेमोरियल में फ़रमाया है कि "इस देश में तीन जातियां हैं हिंदू ईसाई और मुसलमान। हिंदुओं और ईसाइयों को उनके धार्मिक संस्कार के दिन सरकार ने दिया हुआ है अर्थात रविवार जिसमें वह अपने धार्मिक रीति अदा करते हैं जिस की छुट्टी आमतौर पर होती है लेकिन यह तीसरी जाति अर्थात मुसलमान अपने त्योहार के दिन अर्थात जुमअ: से वंचित है।" फिर आप ने आगे फरमाया कि "इन उपकारों की सूची में जो सरकार ने मुसलमानों पर किए हैं अगर यह एहसान भी किया गया कि आम तौर पर जुमअ: की छुट्टी दी जाए तो यह ऐसा एहसान होगा जो सोने के पानी से लिखने योग्य होगा।"

यह दर्द था आप का मुसलमानों के लिए और इस्लामी आदर्शों की पाबन्दी करवाने के लिए और इबादत की ओर ध्यान आकर्षित करने के लिए। फिर आगे लिखते हैं "अगर सरकार इस मुबारक दिन की यादगार के लिए मुसलमानों के लिए जुमअ: की छुट्टी खोल दे या अगर न हो सके तो आधा दिन की ही छुट्टी दे दे तो मैं समझ नहीं सकता कि साधारण दिल को ख़ुश करने के लिए और अधिक कोई कार्रवाई है।"

(अल्हकम 24 जनवरी 1903 ई पृष्ठ 5-6 जिल्द 7 नम्बर 3)

आज मुसलमान या जो तथाकथित उलेमा हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पर आरोप लगाते हैं कि अंग्रेज़ों के हाथ का लगाया हुआ पौधा है लेकिन अंग्रेज़ सरकार को मुसलमानों के धार्मिक अधिकारों की ओर ध्यान दिलाया तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने किसी और मुसलमान नेता को ताकत नहीं मिली और यह आपका ही काम था क्योंकि यह युग जिस में इस्लाम के महत्त्व को दुनिया में स्पष्ट करना और उसकी वास्तविक शिक्षा का पालन करवाना था यह आप के माध्यम से होना था यह आपके ज़िम्मे काम था। अल्लाह तआला ने आप को यह काम सौंपा है।

इसलिए हम जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मानने का दावा करने वाले हैं हमारे हर कर्म और कथन से इस्लाम की शिक्षा प्रकट होनी चाहिए हमें यह प्रतिज्ञा करनी चाहिए यह रमज़ान जिन बरकतों को लेकर आया था और जो बरकतें छोड़कर जा रहा है उसे हम ने अपने जीवन का हिस्सा बनाना है। इंशा अल्लाह तआला। हम में इस्लाम की व्यावहारिक छवि केवल एक महीने के लिए नहीं होनी चाहिए बल्कि ज़माने के इमाम से किए हुए वादे को स्थायी पूरा करना है।

अब मैं इस बात की ओर ध्यान दिलाते हुए कि यह मसीह मौऊद का ज़माना था और जुमअ: के साथ इस विशेष महत्त्व है और फिर हमारे उत्तरदायित्व क्या हैं उसकी ओर ध्यान दिलाते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के एक दो उद्धरण प्रस्तुत करता हूँ।

एक स्थान पर आप फरमाते हैं कि "ख़ुदा तआला ने जो नेअमत को पूरा किया है वह यही धर्म है जिसका नाम इस्लाम रखा है। फिर नेअमत में जुमअ: का दिन भी है जिस दिन नेअमत पूरी हुई। यह इस की तरफ इशारा था फिर नेअमत का पूरी होना जो لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ के रूप में होगा वह भी एक भव्य जुमअ: होगा। वह जुमअ: अब आ गया है क्योंकि ख़ुदा ने वह जुमअ: मसीह मौऊद के साथ विशिष्ट कर रखा है।"

(मल्फूज़ात भाग 3 पृष्ठ 183 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

फिर आप हमें ध्यान दिलाते हैं। आप फरमाते हैं

"मैं सच कहता हूँ कि यह एक आयोजन है जो अल्लाह तआला ने नेक प्रकृति लागों के लिए पैदा कर दिया है। मुबारक वही हैं जो इससे लाभ उठाते हैं तुम लोग जिन्होंने मेरे साथ संबंध बनाया है इस बात पर हरगिज़ कभी अभिमानी न हो कि जो कुछ तुम ने पाना था पा चुके सच है कि तुम उन इनकार करने वालों की तुलना में सौभाग्य के करीब हो जिन्होंने अपने सख्त इनकार और अपमान से ख़ुदा को नाराज़ किया है और यह भी सच है कि तुम ने सुधारणा से काम लेकर ख़ुदा तआला के प्रकोप से अपने आप को बचाने की चिंता की लेकिन सच्ची बात यही है कि तुम उस चश्मे के करीब आ पहुंचे हो जो इस समय ख़ुदा ने अनन्त जीवन के लिए बनाया है। हां पानी पीना अभी बाकी है। तब ख़ुदा तआला की कृपा से तौफ़ीक़ चाहो कि वह तुम्हें सिंचित करे क्योंकि ख़ुदा तआला के अतिरिक्त कुछ भी नहीं हो सकता। यह मैं वास्तव में जानता हूँ कि जो इस चश्मे से पीऐगा वह नाश न होगा, क्योंकि पानी जीवन देता है और मौत से बचाता है और शैतान के हमलों से बचाता है इस चश्मे से सिंचित होने का क्या तरीका है यही कि ख़ुदा तआला ने जो दो अधिकार तुम पर स्थापित किए हैं उन्हें बहाल करो और पूरे तौर पर दो इनमें से एक ख़ुदा का अधिकार है दूसरा सृष्टि का।"

(मल्फूज़ात भाग 3 पृष्ठ 184 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

इसलिए आज हम सब यह सकंल्प करें कि हम अपनी बैअत की प्रतिज्ञा को पूरा करने वाले बनेंगे और अल्लाह तआला और उसकी सृष्टि के पक्ष इसी तरह अदा करने की कोशिश करेंगे जिस तरह एक मोमिन से आशा की जाती है और जिस तरह अल्लाह तआला ने आदेश दिया है और जिसे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने व्यक्त किया है। रमज़ान की बरकतों को हम हमेशा अपने जीवन का हिस्सा बनाएंगे इंशा अल्लाह तआला। अल्लाह तआला हमें इसकी ताकत प्रदान फरमाए।

☆ ☆ ☆

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad